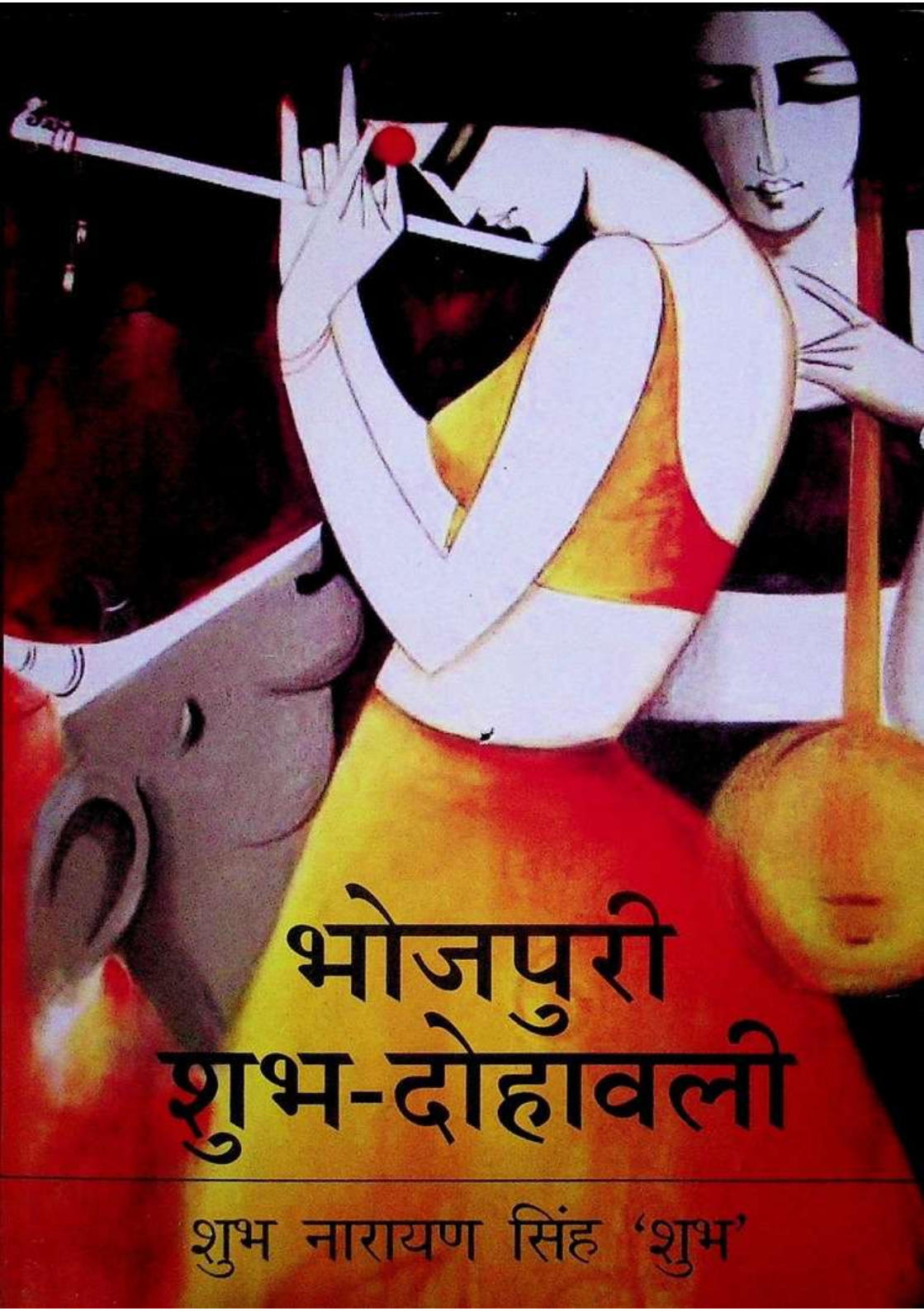
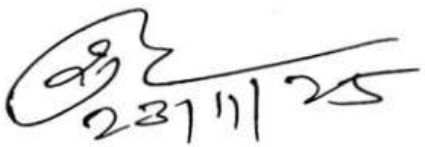


भोजपुरी शुभ-दोहावली

शुभ नारायण सिंह 'शुभ'

www.bhojpurisahityangan.com



भोजपुरी शुभ-दोहावली

शुभ नारायण सिंह 'शुभ'

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी
शुभ-दोहावली

शुभ नारायण सिंह 'शुभ'

शिवालिक प्रकाशन
दिल्ली भारत

www.bhojpurisahityangan.com

प्रथम संस्करण : 2022

ISBN :978-93-91214-00-5

इस पुस्तक का कोई भी भाग किसी भी रूप में या किसी भी अर्थ में लेखक की अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता। सर्वाधिकार लेखक के अधीन है।

© लेखक

प्रकाशक :
शिवालिक प्रकाशन
4648/21, अंसारी रोड, दरियागंज
नई दिल्ली-110002
फोन : 011-42351161
ई-मेल : shivalikprakashan@yahoo.com

ाखा कार्यालय
लॉट सं. 394, संजय नगर कालोनी
पहरिया, रामदत्तपुर, वाराणसी (उत्तर प्रदेश)

भारत में प्रकाशित

विरेन्द्र तिवारी द्वारा शिवालिक प्रकाशन दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित। शब्द संयोजन : **मो० अख्तर हुसैन जौहरी, एकमा, सारण (बिहार)**। कवर डिजाइन : ज्याति राय।

BHOJPURI SHUBH DOHAWALI
BY - SHUBH NARAYAN SINGH SHUBH

मूल्य : 150.00 रुपये

www.bhojpurisahityangan.com



(पुण्य तिथि-21-07-1979)

संयम उदारता, ईमानदारी, सादगी, निश्छलता, निश्पक्षता, साधुता, स्वच्छता आ समरसता संभाव के आदर्श पुरूष परम आदरणीय दादा जी स्व0 बाबू रामजतन सिंह जी आ दादी स्व0 जानो देवी का चरणन में भोजपुरी शुभ दोहावली रूपी श्रद्धा सुमन सादर समर्पित।

शुभ नारायण सिंह 'शुभ'
ग्राम- चरिहारा, पो0- मशरक
जिला-सारण (बिहार)
पिन कोड- 841417,

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

प्रकाशकीय

शुभ दोहावली प्रकाशित करत हमरा मन में अनघा बधाई के हरसिंगार बरबस वैचारिक आदर्श आ नैतिक ऊर्जा का साथ झर-झर मोती नियर झहर-घहर रहल बा।

आचार्य शुभ नारायण सिंह 'शुभ' जी के लगभग एक दर्जन का आस-पास ऊँच्च स्तरीय साहित्यिक कृतियन के प्रकाशित करत हमार शिवालिक प्रकाशन गर्वान्वित बा। आज फेरू एगो पुष्ट व्याकरणीय चौकसी पर आधारित कृति बनाम शुभ-दोहावली प्रकाशित करे के हमनीं का गौरव हो रहल बा।

भोजपुरी भाषा साहित्य में अब ले दोहा लेखन पर बहुत कम काम भइल बा। भोजपुरी सतसई सम्मिलित संग्रह आ दोहे-संग्रह तक बात सीमित रहल ह, बाकि पहिला बेर भोजपुरी पुरूष सूफी संत डॉ0 जौहर शफियादी जी के 'जौहर-दोहावली' जवना के प्रकाशन के गौरव हमरा शिवलिके प्रकाशन के प्राप्त बा, जवन मार्च 2016 ई0 में छपल। एह भोजपुरी भाषा साहित्य के दूसरका दोहावली 'शुभ-दोहावली' बा।

अंत में भोजपुरी भाषा साहित्य के अपना लेखनी से मान-सम्मान बढ़ावेवाला साधक भाई आचार्य शुभ नारायण सिंह 'शुभ' जी के हृदय-तल से बधाई आ जय भोजपुरी कहत बानीं।

वीरेन्द्र तिवारी
शिवालिक प्रकाशन नई दिल्ली
दिनांक-14.01.2022

www.bhojpurisahityangan.com

टोह

क्र0सं0	विषय	पृष्ट संख्या
1.	भूमिका	9
2.	आपन बात	11
3.	दोहा-संग्रह	13
4.	विमर्श	92
5.	कवि परिचय	103



www.bhojpurisahityangan.com

भूमिका

डॉ0 जौहर शफियाबादी

दोहा मात्रिक छंद कला, भाषा भाव गम्भीर।
तेरह ग्यारह के दुगुन, हन-हन मारीं तीर।।

काव्यशास्त्रीय विधानन पर आधारित दोहा छंद एगो बड़ा छोट काया के गोट मारक कला ह, जवन देखन में छोटन लगे, घाव करे गंभीर के चरितार्थ करेला।

महाकवि कालीदास के संस्कृत दोहा से अपभ्रंश दोहन तक दोहा छंद के सुन्दर प्रयोग मिलेला। कबीर दास आ महाकवि तुलसी, रहीम आ बिहारी के इहाँ निखरल स्वरूप देखल जा सकत बा। भोजपुरी में कबीर दास, लोककवि घाघ, भड्डरी आ डाक के रचना एह बात के प्रमाण बा कि भोजपुरी कविता एह छंद के बहुत पहिले से अपना चुकल बिआ। एही कड़ी के आगे बढ़ावत 2011ई0 में अखिल भारतीय साहित्य-सम्मेलन पटना विभिन्न कवियन के रचनन पर आधारित एगो भोजपुरी सतसई प्रकाशित कइलस आ फेर 22 मार्च 2017 के भोजपुरी के पहिला 'दोहावली बनाम जौहर दोहावली' छपल। ओकरा बाद पाण्डेय कपिल जी के भोजपुरी दोहा-संग्रह छपल बा। ओकरा बाद यशस्वी कवि आचार्य शुभ नारायण सिंह 'शुभ' जी के ई दोहावली छपे जा रहल बा जवना से निश्चित रूप से भोजपुरी भाषा आ साहित्य के भंडार भरी आ दोहो लेखन शैली के प्रचार-प्रसार होई।

ई शुभ-दोहावाली अपना काव्यकायिक स्परूप आ भाषा-शैली के लालित्य का साथ दोहा लेखन के एगो नमूना बा।

दोहा लेखन के कला में लघु गुरू संख्या भेद का आधार पर 'प्राकृतपैंगलम' नामक ग्रंथ में जवन 23 गो दोहा के भेद बतावल गइल बा लघु-गुरू के मात्रिक उलट-फेर से ओह सब पर दोहा परोसल बा आ सारा शास्त्रीय विधि-विधान के पालन कइल गइल बा।

www.bhojpurisahityangan.com

'प्राकृतपैंगलम' में 23 गो दोहा के भेद बतावल गइल बा, बाकि व्यवहार में 21 गो बा। 22 आ 23 व्यवहार में नइखे। एही से दोहा छंद के एकइसो प्रकार- भेद के शास्त्रीय सूत्रन पर लिखल जाला।

शास्त्रीय आधार पर छंदन के नाम बा-

1. भ्रामण	2. भ्रमण	3. शरम	4. सरवाण
5. मंडूक	6. मकट	7. करम	8. नर 9. मराल
10. मदकल	11. पयोधर	12. बल	13. बानर
14. त्रिकल	15. कल्छप	16. मत्स्य	17. शार्दूल
18. अहिवर	19. व्याघ्र	20. विराल	21. शफुन
22. उंदूर	23. सर्प		

एह सब पर भोजपुरी में पुष्ट दोहा एकरा पहिले परोसल जा चुकल बा।

शुभ दोहावली पढ़ के हमार मन गद्-गद् बा कि प्रियवर आचार्य शुभ नारायण सिंह 'शुभ' जी अपना मातृभाषा के भंडार भरे में रात-दिन भोजपुरी के ओढ़ना-विछावना बना के तन-मन से जूटल बानीं आ समाज के क्वांटिटी (भंडार-मात्रा) ना कवालिटी (गुणवत्ता) देवे के प्रयास कर रहल बानीं, जवन भोजपुरी भाषा साहित्य विकास खातिर निश्चित रूप से शुभ बा **आ एह पुस्तक का प्रकाशन से भोजपुरी भाषा साहित्य के भंडार भर रहल बा आ शुभ-दोहावली भाव क्षेत्र का अंगनाई में भिन्ता-विभिन्ता का साथ विविधता के चिंतन-चेतना जागृत करे में पूरा-पूरी सफल बा।**

पूर्व महामंत्री
अखिल भारतीय साहित्य-सम्मेलन पटना
आ सिनेटर
जामिया मिल्लिया इस्लामिया
केन्द्रीय विश्वविद्यालय नई दिल्ली।
ख़ानकाहे जौहरे आज़म, जौहर नगर
राजयपुर, छत्तीसगढ़
22 जनवरी 2018

www.bhojpurisahityangan.com

आपन-बात

भोजपुरी भाषा सुनीं जस अमरित के धार।
कहत-सुनत शहद टपके पढ़त गुणत हर बार।।

आज भोजपुरी माई का खोंइछा में ई शुभ दोहावली परोसत हमार हिया खुशी से गद्‌गद्‌ हो के नाच रहल बा। भोजपुरी जवन हमार मातृभाषा ह एकरा प्रति लइकाइए से हमार अगाध प्रेम रहल बा आ हमार इहे श्रद्धा बा कि अंतिम सांस तक अपना भोजुपरी माई के सेवा करत रहीं।

आज ई कलयुगिया समाज घोर कुरीतियन का फंदा में अझुराइल बा। एकर एके गो मुख्य कारण अज्ञानता आ अशांति बा। लोग धन के पीछे भाग रहल बा ओही में शांति खोज रहल बा, बाकि कोरोना जइसन महामारी खूब नीके तरी बता देले बा कि रिश्ता आ धन के महत्व का बा जब लाश प लाश ढोआय लागल तब बेटा के लाश बाबू पति के लाश पत्नी का भा पत्नी के लाश पति का देखहूँ के ना मिलल आ लोग एक-एक साँस के मुँहताज होखे लागल त आस्था का बाजार में मंदिर मस्जिद के व्यापारो फिका पड़ गइल। एह असलियत क बोध होखे लागल कि वास्तव में एह संसार में असली चीज का बा, तबो अहंकारी लोग में लोलुप मानसिकता का लोभ में सच्चाई का तरफ मुखातिब होखे के कवनो आसार दिखाई नइखे देत। लोग अबहुँओ धने खातिर बेचैनी में जी रहल बा आ एकरा खातिर तरह-तरह के हथकंडा अपना रहल बा। चाहे ऊ श्रृंगारिक होखे भा कारूणिक चाहे दोसरे कवनो भाव काहे ना होखे लोग का अपनावे में कवनो संकोच नइखे होत। एह तरे हमरा जवन-जवन समाज में देखे के मिलल बा ओकरा के लिखे के प्रयास कइले बानीं।

हम अपना एह प्रयास में केतना सफल बानीं ई त रउए सभन तय करब। हमार सफलता भा असफलता पाठक लोग का संतुष्टि पर निर्भर बा। हम आत्ममुग्ध ा ना अपना संतुष्टि आ समर्पण का सोझा जरूर सफल बानी। अंत में हम निम्न दोहा का संगे वाणी के समाप्त करत बानीं। आ संगे-संगे निहोरा करत बानीं कि कवनो त्रुटि लउके त निःसंकोच आगाह करेब सभे।

ना अइसन भाषा मिली, खोज लेहु संसार।
पढ़त-लिखत मनवा भइल गद्‌गद्‌ मोर अपार।।

जय भोजपुरी

शुभ नारायण सिंह 'शुभ, अवकाश प्राप्त अध्यापक
ग्राम- चरिहारा, पो0- मशरक, जिला- सारण (बिहार)
05 जनवरी 2018

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

नित दिन गुरू के वंदना, जे जग के करतार।
बंधन मुक्त कराइ के, कर देवे भव पार।।

गुरू हरि में सुन भेद बा, हरि त सिरिजनहार।
हरि माया गर फाँस दे, गुरू मेटावनहार।।

गुरू के महिमा बा सुनऽ, रह सुमिरण के साथ।
हरि के सुमिरण से बड़ा, गुरू हरि हर के नाथ।।

गुरू जस दाता ना भइल, पुरा जगत के बीच।
गुरू-ज्ञान का बोध से, मन के भीतर खींच।।

गुरू समान ना बा केहु, देख पुरा संसार।
नाम के बोध कराइ क, कर देवे भव पार।।

बंदी छोड़ ह नाम सुन, सतगुरू के नर नार।
हरि डारे भवजाल में, गुरू छोड़ावनहार।।

गुरू के सुमिरण जे करे, सांस-सांस में भाय।
बाल बांका न हो सके, तीन लोक डर नाय।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

एक पेट से जनम भइल, रावण विभिषण नाम।
एगो भगत बा बन गइल, दोसर असुर महान।।

राम के वन गमन भइल, सहचर लछुमन जान।
भाई सहोदर इ भइल, देह दूइ एक प्राण।।

राम भरत दुइ पेट से, पेट बा एक समान।
राम के बनवास भइल, त भरत नंदी ग्राम।।

राम के गद्दी छूटल, भरतो छोड़स जान।
इहे सहोदर हो गइल, उदर दुनो एक जान।।

भरत ला गद्दी छूटल, भरतो छोड़स राज।
राख खड़ाऊँ सिंहासन, भरत चलावस राज।।

केकई के भरम गइल, भरत क प्रेम महान्।
जब तक सृष्टि अमर रही, राम भरत जग जान।।

राम के वन गमन भइल, दशरथ जी निष्प्राण।
पिता पूत के नेह ई, जगत में बा महान्।।

नेह छोह अब ना रहल, रहल अमन ना चैन।
धन का लोभे लोग सब, दिनो रात बेचैन।।

लोभ में बा डूब गइल, पूरा जग सरकार।
कब तक ले आई इहाँ, प्रेम राज तोहार।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

जर रहल संसार पुरा, क्रोधी धधकत आग।
लागत बा लहक जाई, फलत फुलत ई बाग।।

काम क्रोध बा बन गइल, कलयुग में हथियार ।
प्रेम भाव सब मिट गइल, देखीं जगत विचार ।।

दया धरम अब ना रहल, छल आ कपट अपार ।
'शुभ' ई क्षमा दया बिना, डूब जाइ संसार ।।

करनी तऽ बा गजब के, बोले मधुरी बोल ।
कइसन अब ई भाव बा, का बोली के मोल ।।

लाज शरम ना रह गइल, लोभ भइल तइयार ।
नेह छोह सब चल गइल, बा धने से प्यार ।।

नर तन जब बा मिल गइल, छोड़ पशु-व्यवहार ।
फेर ना कबहूँ मिलिहें, काहे बनल गँवार ।।

'शुभ' धनवे का लोभ में, जे दिन रात अचैन ।
ईमान गइल सब गइल, ना पानी बा नैन ।।

कलयुग के बाटे भइल, धनवे में 'शुभ' वास।
तब काहे ना होइ अब, कुल के सत्यानाश।।

लोभ मोह का होड़ में, बा चंचल चितचोर ।
दया धरम सब चल गइल, शरम गइल बा तोर ।।

नेह छोह जब ना रहल, रहल अमन ना चैन ।
लोभ मोह का छाँव में, मन बाटे बेचैन ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

नेता कुल नेते भइल, सकल सगा संबंध ।
टुकड़ा दे मुँह बांध दे, दे खाली अनुबंध ।।

दाव पेंच अब छोड़ के, घट भीतरे निहार ।
भटक रहल बा लोग सब, भीतर पिउ तोहार ।।

साहेब साँचा एक बा, लोग त कहे अनेक ।
साँचा सतगुरू जब मिले, मिटे भरम के टेक ।।

भरम मिटल सब ज्ञान से, भीतर भइल विवेक ।
मन्दिर मस्जिद एक भइल, मिटत गइल अविवेक ।।

जतहक चादर बा मिलल, ततहक पैर पसार।
काहे हउआइल बाड़, राखऽ नीक विचार।।

समय का आगे समय ह, का परवाह बिसात ।
तन इहो जब छुटि जाई, का होइहें बिसात ।।

हिया हिया का प्रेम बा, मनवे का बा डाह ।
जहाँ हिया में प्रेम ना, 'शुभ' दुख के बा राह ।।

माथे बोझा लाद के, जे केहु लंगराय ।
बूझीं ऊ अनाड़ी बा, ऊ मूरख कहलाय ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

बूझ ल आपन के भइल, जेकरा संग नेह ।
ऊ आपन का बन सकी, खुद से ना बा नेह ।।

नीति अनीति विचार के, जे केहु करे बात ।
ऊ कबहूँ ना कर सकी, केहु का संग घात ।।

जे केहु आपु छोड़ के, मुख से बोले बात ।
बूझीं भरल विकार बा, थोंथा ज्ञानि कहात ।।

नीक सलाह जे देवे, उहे साँच इंसान ।
पैदा उलझन जे करे, ऊ होला शैतान ।।

बिसाते के नशा चढ़ल, लोग बिसात बनाय ।
का होइहें बिसात जब, तनवो छूटल जाय ।।

का कहीं सखी ना भइल, मन में नेक विचार ।
आशा टिसना ले गइल, इमान कुल परिवार ।।

हिया के रूप तऽ एक बा, मन के भइल अनेक ।
वास हिया में जे कइल, उनका भइल विवेक ।।

झूठ प्रीत के रीत बा, झूठा बा संसार ।
एक दिन सब इहवें छुटी, काहे मोह अपार ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

ठुनुक रहल बा प्रेम अब, सिसक रहल बा राग ।
का झूठा संसार में, 'शुभ' अइसन अनुराग ।।

अंसल जेकर देह बा, भरल पुरल भंडार ।
ओकरे त अब पूछ बा, बाकी सभे गंवार ।।

जेकर जइसन रीत बा, ओइसने बा मीत ।
साथी ओइसने मिलल, जइसन गावे गीत ।।

कलयुग के ई रीत बा, साँचा झूठ कहाय ।
साँच-झूठ का चाक में, साँचा पीसल जाय ।।

सभकर आपन रंग बा, सभकर आपन ढंग ।
ज्ञानी जन बा ऊ सभे, जेकर बा एक रंग ।।

साँचा सब पाछे गइल, झूठा आगे आय ।
स्वारथ का बाजार म, झूठ साँच हो जाय ।।

बा कलि में मुश्किल भइल, झूठ साँच के भान ।
काँचे हीरा बा बनल, थोंथा झूठा ज्ञान ।।

धरम करम के का बुझी, बाटे जहवाँ लोभ ।
गलत करे में ना चुकी, ना बा तनिको क्षोभ ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

गाभी ताना मार के, अगिया देत लगाय ।
उहे लोग कलिकाल में, परम सपूत कहाय ।।

नर भक्षी शुभ उहे भइल, जे पर हक धन खाय ।
आपन गठरी बाँध ले, पर के हड़पत जाय ।।

नर पिशाच शुभ ऊ भइल, पर के ना परवाह ।
पर के दुख देवे सदा, खुद के बा परवाह ।।

पीछा में शिकवा करे, सामने गुण बखान ।
ओकर हितई छोड़ दऽ, 'शुभ' तू बैरी जान ।।

आपन निंदा खुब सुने, पर के जे गुणगान ।
'शुभ' ओही के बूझ लऽ, हऽ साँचा इन्सान ।।

जे मुँह पर शिकवा करे, ऊ साँचा इन्सान ।
पीछा में चुगली करे, उहे हटे शैतान ।।

साँच बात कतहीं कहीं, ना शिकवा हऽ जान ।
झूठ बात कतहीं कहीं, बा शिकवा पहचान ।।

पीछा में शिकवा करे, सामने गुण बखान।
नाहि कबो हित बन सकी, पक्का बैरी जान ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

कलयुग के गति का कहीं, कइसन गति बा तोर ।
लाज न लागत लाज का, 'शुभ' अइसन मति तोर ।।

बेईमानी जे करे, पर के कहत ठठाय ।
कलयुग के बा रीत ई, लाजो नाहिं लजाय ।।

कलि पुरूषन के बात सुन, बेटी बा अपराध ।
नीक न केहु का लागे, 'शुभ' ना पूरल साध ।।

भाई से भाई लड़े, ना रहल अब प्यार ।
रिश्ता सबहीं खतम बा, डुब गइल संस्कार ।।

ना जग में अऊत केहु, बोध ह पूत समान ।
गाछ लगावऽ एगो तू, 'शुभ' दस पूत समान ।।

पर के दुख जे देख कें, 'शुभ' नर देत ठठाय ।
नर उहे सब असुर भइल, पर दुख में इतराय ।।

भाई से भाई लड़े, लालच खोले दाव ।
ऊ भाई ना भाई ह, देख-देख जर जाव ।।

भाई से भाई लड़े, नेह छोह सब खोय ।
लालच भीतर भर गइल, लमहर बैरी होय ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

मनवा जेकर बा गइल, सातवाँ आसमान ।
गफलत में बा पड़ गइल, अब ओकर ईमान ।।

जहाँ मान न होय कबो, होय जहाँ अपमान ।
मत जाईं कबहूँ उहाँ, बूझीं ऊ शमसान ।।

कलयुग के ई रीति बा, झूठे से बा प्रीत ।
मत करीं कहीं दुश्मनी, मत बनीं कहीं मीत ।।

जहाँ भाव अइसन रही, उहवाँ प्रेम अटूट ।
कर ना पइहें कुछ केहु, ना डलिहें ऊ फूट ।।

भाई भाई में रही, जब तक प्रेम अपार ।
एक दोसरा का संग में, जस म्यान तलवार ।।

म्यान बिन तलवार में, लागे जइसे जंग ।
खतम होय मरजाद तब, भाई-भाई जंग ।।

दया धरम अब ना रहल, नाहीं शरम विवेक ।
तबहीं तऽ 'शुभ' चल गइल, करम रहल ना नेक ।।

सच्चाई का मार से, झूठा सब विखियाय ।
पानी पड़ल अब देह प, रहि रहि विख उगिलाय ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

स्वारथ में बा दुनिया, मन में भरल विकार ।
मनसा पूरा ना भइल, तबे भइल तकरार ।।

जे खाली खुद में पड़ल, होय हमर बिस्तार ।
उहे असुर बा बन गइल, बा असुर-व्यवहार ।।

स्वारथ में सब लोग ब, भरल पुरा संसार ।
पर के ना उ देख सके, नाहर पेट तहार ।।

थोंथा ज्ञान बढ़ाइ के, जे महान कहलाय ।
विद्वान सब के का कहीं, बक-बक सब कर जाय ।।

आग-पाछ जे ना बुझे, फट दे बोले बोल ।
उहे मूढ़ अनाड़ी बा, झूठा मानुष चोल ।।

पा के मानुष चोल के, ना सुलझल जब बात ।
काहे ला ई तन मिलल, नइखे बात बुझात ।।

पढ़ला से तब का भइल, नइखे भीतर बोध ।
पल-पल में रंग बदले, बाटे हरदम क्रोध ।।

तनिक ठहर के सोंच लऽ, ना जो बात बुझाय ।
थोंथा ज्ञान का आग म, लहकत दहकत जाय ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

जहवाँ बाटे हो गइल, झूठ ज्ञान अभिमान ।
काल के ह भोजन इहे, छोड़ झूठ अभिमान ।।

जे धन नाहिं भोग सकल, भा ना कइलक दान ।
जनम-मरण बेकार बा, ना भइलक इंसान ।।

मानवता अब फेल बा, दानवता मजबूत ।
जहवाँ चाहीं परख ली, पक्का बा साबूत ।।

बदलल बदलल नीति बा, कलयुग के ई रीति ।
सुर बनाके कोयल के, कउओ गावे गीत ।।

भइया काका चल गइल, लोग टिकावे दाव ।
'शुभ' कहवाँ बा रह गइल, आपस में सद्भाव ।।

बटमारन का होड़ में, लोग भइल बेहाल ।
देखीं परखी बूझ लीं, कइसन मालामाल ।।

बाहर से ह हंस बनल, भीतर बकुला भान ।
बूझीं ऊ अज्ञानी बा, नाहिं ओकरा ज्ञान ।।

माय-बाप जब छोड़ दे, हियरा में ठहराव ।
जइसे ध्रुव सपूत काऽ, अचल अनूपम ठॉव ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

कथनी करनी में जहाँ, अंतर देत बुझाय।
ऊ नर मूढ़ अनाड़ी ह, खुद पंडित कहलाय ।।

हरनाकुश पुत छोड़लें, जबहिं भइल अभिमान ।
नरसिंह रूप बनाई के, 'शुभ' ले लिहलन जान ।।

प्रहलाद के ना भइल, बालो बाँका जान ।
दूनो जन अमर भइलें, जाने जगत जहान ।।

क्रोधित होय बाजश्रवा, यम के दिलहन दान ।
नचिकेता अमर भइलन, जाने जगत जहान ।।

डर के जीवन का जीए, जीए शेर समानऽ ।
अपना के जे जान ले, कहाँ मौत के भान ।।

राजा का सिर मुकुट बा, दीन का ना पनाह ।
राजा अपना रंग में, दीन हिया का आह ।।

झूठ साँच के अब इहाँ, लागल बा बाजार ।
चाहत बाटे जे जवन, ओकर खरिदनहार ।।

जात-पात का नाम पर, नाचत बा सब लोग ।
सबका लागल बा इहे, गजबे के ई रोग ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

दया धरम तन मूल हऽ, शील सुभाव तहार ।
झूठा ढोंग रचाइ के, बन गइल तू लबार ।।

दया धरम तन मूल बा, दरपण में तु निहार ।
दया धरम के छोड़ के, हो गइल तू गँवार ।।

खाली धन संचित करे, भोग नाहिं जे पाय ।
ऊ नर मूढ़ अनाड़ी ह, चौरासी में जाय ।।

छल व कपट सब तेज के, कर जगत व्यवहार ।
मानुष तन बा मिल गइल, कर मनुज से प्यार ।।

जिनगी में खुशियालि बा, बूझ बा नीके दिन ।
कष्ट अगर जे आ गइल, नीक करम कर तीन ।

सेवा सत्संग, सुमिरण, नीक करम ई तीन ।
बेड़ा पार लगाइहें, होइहें अच्छा दिन ।।

मीन पियासल नीर के, नीर का नाहिं चाह ।
छोड़ जाल बाहर गइल, ना कइलक परवाह ।।

नर तन पाके का भइल, ना कइलक उपकार ।
बा जीवन बेकार ऊ, जनम-मरण धिक्कार ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

धन के ना उपभोग बा, नाहिं भइल कुछ दान ।
जनम-मरण बेकार बा, भइलक ना इंसान ।।

जवना घर में होत बा, नारी के अपमान ।
ओ घर के बूझीं सभे, बा मरघट शमशान ।।

कलयुग झूठ के गाछ ह, डाल-पात सब झूठ ।
आशा टिसना छोड़ द, फल छाया सब झूठ ।।

पुत कपूत गर हो गइल, ना सनेह का योग ।
ओह के अब तू छोड़ द, जिनगी भर के रोग ।।

झूठ गाछ तर का मिली, ना फल नाहीं छाँह ।
चिरइ चुरूंग भुखे मरी, का करिहें परवाह ।।

जहवाँ धन से नेह बा, ना हियरा से नेह ।
मत जाईं कबहूँ उहाँ, सोना बरसे मेह ।।

रूप देख मत भूल करऽ, माटी के सिरखार ।
असली रूप भीतर भइल, ओ से कर ल प्यार ।।

गजब गति ह चंचला के, थीर कबो ना होय ।
आज इहाँ बा कल उहाँ, बात बुझे ना कोय ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

गांछ बोय अगर ओमे, गरम पानी दियाय ।
ऊ नाहिं गाछ उपजिहें, न फल छाँह भेंटाय ।।

बाप-बेटा का नेह न, रागो-द्वेष अपार ।
एके गो से नेह भइल, दोसर चुल्हा भांड़ ।।

गाछ अगर जे रोप के, पानी गरम पटाय ।
'शुभ' फल के आशा करे, ऊ मूरख कहलाय ।।

गाछ अगर जे रोप के, पानी खाद दिआय ।
फल के चाहत्त तब करे, ऊ मीठा फल खाय ।।

बेटीवाला के केहु, कहे सदा निर्वन्श ।
लोग सबऽ उनके कही, हरनाकुश आ कंस ।।

कपूतन के लक्षण इहे, अभिमानि बेइमान ।
परहक के धन खाइ के, रोज बघारे शान ।।

जे केहु अब कपूत के, पाला गह ले हाय ।
उहो लोग कपूत भइल, जग में नाम हँसाय ।।

गुण कुलछनी नारी के, चुगली करत अघाय ।
घर-घर में नारी उहे, अगिया देत लगाय ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

पूत मरद आपन जँचे, दोसर ना सोहाय ।
कलह के बिया रोप के, मरदन के भरमाय ।।

ओ कुलछनी नारी के, मत पूछीं कुछ हाल ।
हरदम कलह बढ़ाइ के, रचते रही बवाल ।।

पड़ोसी झगड़ालु भइल, दिल से दूर अपार ।
नेह छोह सब छोड़ के, उपर से व्यवहार ।।

निर्लज साला गर भइल, ना ओकर विश्वास ।
दिल से हितई मत करऽ, रह लऽ खासम खास ।।

बन्धु कुबन्धु अगर भइल, ना रह पाई नेह ।
हरदम चिंता में रही, कइसे निमही नेह ।।

पल-पल बोलत ऊ रही, भरल व्यंग क बात ।
हरदम दावे में रही, तहरा संगे घात ।।

बन्धु कुबन्धु अगर भइल, हरदम रहऽ सचेत ।
कौड़ी लागी लोभ वश, दी तहरा के रेत ।।

नारि कुलछनी गर भइल, हिया से रखऽ दूर ।
बात-बात में क्रोध दी, हो जइबऽ मजबूर ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

पुरोहित लंपट गर बा, ठगत रही ऊ दाम ।
यजमान चुल्हा भांड़ म, दामे से बा काम ।।

छलिया ई संसार बा, छले कइल बा काम ।
तबहीं नू बा हो गइल, कलयुग ई बदनाम ।।

हमहि ठीक हमार ठीक, ठीक हमर परिवार ।
परदा उठा के देख ल, भीतर भरल विकार ।।

जहवाँ भीतर भर गइल, लमहर बनीं महान् ।
सोंच ई लमहर भईल, बनी करम पहचान ।।

गरबी जब मनवा भइल, पशु जसऽ व्यवहार ।
ओह मनई के बूझ ल, बाटे असुर गँवार ।।

हमहिं नीक हमार नीक, बाल बुतरू परिवार ।
पशु बिना सींग पोंछ के, ऊ मनई सरकार ।।

कथनी में कुछ अउर बा, करनी में कुछ अउर ।
इहे चाल मायाबी ह, गले माल संग लउर ।।

जहवाँ भीतर जहर बा, बाहर अमरित धार ।
कालनेमि ऊ बा बनल, कपटी बं व्यवहार ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

भाषण लमहर दे गइल, लमहर कइल बयान ।
कपट लपट के ले गइल, ऊ का बनी महान् ।।

रूप दूनो के एके बा, कउआ कोयल जान ।
जब आपन मुँह खोलिहें, तब होई पहचान ।।

जेकरा झोली फुल बा, मारी फूल चलाय ।
पथल जेकरा में भरल, उपहारो भेंटाय ।।

भीतर जवने सोंच बा, परगट आगे होय ।
जवन बीज खेते पड़ी, फसल उहे अब होय ।।

जइसन भीतर चाह बा, ओइसने बा राह ।
ऊ अपने चिन्ता करी, पर के ना परवाह ।।

नकली अब असली भइल, बा लोगवा हरान ।
नकल करे का होड़ में, असली बा हैरान।।

जे हिया के बात सुनी, ऊ ना कपटी मान ।
जे मन का वश में रही, कपटी होई जान ।।

दिल दिमाग में भेद बा, जाने उहे महान् ।
मनवे के दिल जे बुझे, कपटी उहे ह जान ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

सगर समान गर पुत हो, होय कुबेर जस धन ।
शांति बिना बेकार बा, छछनत रहीहें मन ।।

शांति अगर जो ना मिलल, पुत भा धन बेकार ।
बूझीं जिनगी बा डुबल, डूब गइल संसार ।।

खाली हाथे आ गइल, खाली काहे जाय ।
प्रेम हिया में भर लिही, पाछे ना पछताय ।।

मानव तन जब मिल गइल, हाथ खाली मत जा ।
भरऽ हिया के प्रेम से, तबे इहवाँ से जा ।।

मानव तन बेकार बा, ना हियरा उदगार ।
मानव तन तब का करी, जनम भइल बेकार ।।

नर तन में बा भेड़िया, भइल जेकरा डाह ।
ना केहू के चाह बा, बा आपन परवाह ।।

हियरा आपन तउल के, तबहीं मुँह से बोल ।
जे बिना तउले बोले, ना ओकर बा मोल ।।

पहिले खुद के जान के, कर जगत व्यवहार ।
इहे जगत के सार बा, बाकी सबहिं असार ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

मन में भरल विकार बा, छल कपटी कुविचार ।
अइसन मानव बन गइल, जइसन मूढ़ गँवार ।।

मानवता ऊपर भइल, मानव से तू जान ।
'शुभ' तन पा के का भइल, खुद के ना पहचान ।।

खाये जवना थाल में, ओह में करे छेद ।
उहे पक्का शैतान ह, पढ़लक चाहे वेद ।।

अपने के लमहर कहे, अपने बाढ़ मनाय ।
अपने खातिर जे मरे, आत्ममुग्ध कहाय ।।

बड़का अपना के कब्बो, ना बड़का कह जाय ।
जे खुद के बड़का बुझे, ना बड़का हो जाय ।।

हीरा परखे जौहरी, जहवाँ कतहीं होय ।
'शुभ' जौहर ऊ का बुझी, काँसा-पीतल ढोय ।।

घट ही में इन्सान बा, घट में ही शैतान ।
सतगुरू से तू जान लऽ, घट ही में भगवान ।।

चापलुसन के भीड़ बा, नाहिं मिले इन्सान ।
का कहीं ना बुझात बा, ना बचिहें ईमान ।।

लूचा लबरा एक भइल, तू का सोंचे यार।
हाथी अपना राह में, कुत्ता भूके हजार।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

भीतर त बा लाज भइल, बाहर बाटे रोष ।
का कहीं अब उनका के, का बा उनकर दोष ।।

जगत में ढेर लोग का, ढेर भइले विसात ।
'शुभ' इहवें सब रह गइल, जवनो रहे विसात ।।

चौपड़ चौसर खेल बा, जबहीं भइल विषाद ।
तबहूँ हमरा ना मिलल, चहनी तवन विसात ।।

गजब जगत के रंग बा, बाटे गजब विचार ।
गजब-गजब के ढंग बा, गजब बा व्यवहार ।।

का कमी रहे बांवरा , हियरा नाहिं अंजोर ।
नाता बाहर छोड़ दे, भीतर नाता जोड़ ।।

नीयत से पहचान बा, इन्सानन के काम ।
'शुभ' नीयत ना ठीक बा, उहे ह सुरत हराम ।।

मन में भरल विकार बा, मनवे में बा चोर ।
अस विचार अब छोड़ के, हियरा नाता जोड़ ।।

नरतन ई उपहार बा, ना सबका भेंटाय ।
किस्मत के बा ऊ धनी, जे एकरा के पाय ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

नाम पताका बा उड़ल, बदनामी के तोर ।
'शुभ' अपयश बा मिल गइल, मनवा भइलक थोड़ ।।

इमान गइल चरित गइल, बनलो बिगड़ल काम ।
'शुभ' भले धनवान भइल, चारो युग बदनाम ।।

ईमान गइल सब गइल, गइल सब संस्कार ।
अब का जाई बॉवरा, 'शुभ' कलंक अपार ।।

जेकरा झोली फूल बा, मरबो करी त फुल ।
पथल जेकरा में भरल, उपहारो दी शूल ।।

चलनी दूसत सूप के, जेमे छेद हजार ।
सूप सारहि गहि लेवे, छोड़त जाय असार ।।

इमान गइल त सब गइल, नाहिं रहल अब शान ।
मुँहा मुँही होते गइल, उहे ह बेईमान ।।

ईमान गइल सब गइल, जगत के व्यवहार ।
'शुभ' खान्दान डुब गइल, का बाँचल सरकार ।।

'शुभ' भइलन बदनाम जे, डूबल बाप क नाम ।
करनी उनकर खा गइल, चमकल उनकर नाम ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

लोभ भइल सब चल गइल, धनवो के अभिमान ।
'शुभ' लमहर का चाह में, बा इज्जत के हान ।।

ईमान गइल सब गइल, कलुषित भइल विचार ।
'शुभ' काथी अब बच गइल, बूझीं ना सरकार ।।

डुबल ईमान बाप के, जब पुत बेईमान ।
अब का बाँचल रे मना, जाने सकल जहान ।।

पढ़ल-लिखल बेकार बा, का बा पढ़ला क गुण ।
ना कबो जब सूझ सकल, बेमतलब बकधून ।।

मारल जेकर अकिल बा, बिगड़त जाई काम ।
कुहुक कुहुक के ऊ मरी, झूठे हरि बदनाम ।।

अंत बुरा क बुरा भइल, जइसन कइलक काम ।
अब पछता के का करी, कतनो जप ली नाम ।।

अकिलो परदा में गइल, भूलल कारज नेक ।
भूलल गुरू गोविन्द के, ओकर मरल विवेक ।।

दगाबाज जे मित अगर, भूलो से मिल जाय ।
हितई ओकर छोड़ दऽ, शांति तब भेंटाय ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

दगाबाज हरदम करी, केहु के संग घात ।
ओहसे त दुश्मन भला, जेकर रूप चिन्हात ।।

दगाबाज ना हंस बा, जइसे रावण संत ।
नीके 'शुभ' तू परख लऽ, बा चिल्होर क तंत ।।

अइसन हितई मत करीं, घरो क भेद बताय ।
ऊ कबहूँ ना हित बनी, दुश्मनियो बढ़ जाय ।।

लोभी लम्पट लालची, ना जेकरा इमान ।
जे भइल बेइमान बा, चारो युग शैतान ।।

स्वारथे अनीति करे, पक्का बा शैतान ।
चारो युग परमान बा, भइलन असुर महान् ।।

महिमा ओकर का कहीं, काथी करीं बखान ।
कलयुग के शैतान जे, उहे बनल भगवान ।।

आस्तीन का साँप के, कवनो ना विश्वास ।
तोहर ना होई कबो, दोसर चाहे खास ।।

बाहर के दुश्मन भला, दुष्ट न घर के यार ।
ओकरा से मिलत रही, हरदम कष्ट अपार ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

घरो में छिपल साँप से, सदा रह होसियार ।
पलखत पाई ना चुकी, तोह पर करी वार ।।

आस्तीन का साँप से, मत कर कबहूँ प्रीत ।
स्वारथ जबहि ना सधी, पल में होई तीत ।।

अइसन हितई भूल के, मत करिह तू इयार ।
चाहे ऊ आपन भइल, भा बाहरी इयार ।।

समझ बूझ हितई करऽ, मत बह भाव क जाल ।
आस्तीन के साँप जे, उ कर दिही कंगाल ।।

साँचा बा झूठा बनल, अब लबरन का बीच ।
ओकर चिन्ता छोड़ के, मन के भीतर सींच ।।

लबरन का बाजार में, कहाँ साँच के पूछ ।
काहे लागि विकल भइल, बा तोहर मन पूछ ।।

रूपे बदल के बन गइल, दुश्मन पक्का हीत ।
ऊपर-ऊपर हीत बा, भीतर से बा तीत ।।

संशय में संसार बा, सगरो बा अंधार ।
ना केहू से मेल बा, ना कवनो दरकार ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

चारो ओर अब देख ल, सब केहू विपरीत ।
रूप बदल दुश्मन भईल, सबसे नीमन हीत ।।

साँच पड़ल कमजोर बा, झूठ भइल मुँहजोर ।
जस बदरी आकाश में, सुरज भइल कमजोर ।।

मायावी घूमत फिरे, रूप बदलत दिन रात ।
इन्सानन का साथ में, हरदमे करे घात ।।

पढ़-लिख के ऊ का करी, भीतर ना बा बोध ।
बात-बात में डाह बा, बात-बात में क्रोध ।।

भीतर अवगुण बा भरल, बाहर गुण फइलाय ।
उहे मूढ़ अनाड़ी बा, आपनो सब गँवाय ।।

चलनी लेखा जे बनल, पर में दोष बताय ।
ना दोष आपन देखे, जग में होत हँसाय ।।

लम्पट लोभी लालची, मूढ़ नरक के खान ।
दोसरा के दुखे दिही, अपनो सब नुकशान ।।

नफरत का बाजार में, कहाँ प्रेम के मोल ।
प्रेम भइल बे मोल बा, नफरत के बा मोल ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

झूठा बा आगे बढ़ल, साँचा पाछे होय ।
कलयुग के महिमा इहे, मानव कपटी होय ।।

हीरा परखे पारखी, जहाँ कहीं भी होय ।
का हीरा के परखि ऊ, साग-पात जे ढोय ।।

जे दोसरा के अंक दी, ऊ मनई इन्सान ।
हरदम अकड़त जे रहे, झूठा बा अभिमान ।।

मानवता ऊपर भइल, मानव से तू सोंच ।
नरतन पा के का भइल, बा दानव के सोंच ।।

भोजपुरी का राह में, लागल बाटे ओट ।
अइसन-अइसन बोल बा, अपशब्दन के चोट ।।

हमहीं अब बड़का बनीं, विद्वानन का रोग ।
देखी कइसन बन गइल, बाटे ई संयोग ।।

भोजपुरी विद्वानन के, लिखल, गजब भेंटाय ।
पढ़-पढ़ के सब लोग भा, मुरखो देत ठठाय ।।

नेत धरम जब चल गइल, का बाँचल तोहार ।
असली धन त डूब गइल, अब का बा सरकार ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

ज्ञानी बा पीछे भइल, अज्ञानियन के मान ।
कामी क्रोधी लालची, लम्पट भइल महान् ।।

कलि में उहे सपूत बा, जे बा बेईमान ।
बाकी सभे कपूत बा, चाहे बा इन्सान ।।

कलि में देव असुर भइल, पाखण्डी अवधूत ।
बेईमान सपूत बा, ईमानदार कपुत ।।

जौहर परखे पारखी, जहाँ कहीं भी होय ।
'शुभ' जौहर उ का परखी, काँसा पीतल ढोय ।।

कुँजड़न का बाजार में, का हीरा के मोल ।
साग-पात के मोल बा, सोना-चाँदी गोल ।।

कथनी में कुछ अउर बा, करनी त कुछ आउर ।
ओही सब पर बा टिकल, कलयुग भइल बाउर ।।

कलयुग में बा सब गइल, नेत धरम विश्वास ।
ऊ आपन अब रह गइल, जेकर खुद में वास ।।

डाह पूत से जब भइल, पुतवो का तब होय ।
घर कलही ऊ बन गइल, निशि दिन झगड़ा होय ।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

एगो पुत से नेह भइल, दोसरका से डाह ।
कुल के चिन्ता ना रहल, ना कवनो परवाह ।।

पूत उहे महान भइल, ना बा कवनो लोभ ।
बापो उहे महान बा, जहँ समता के योग ।।

बाप उहे महान भइल, सब पूत एक समान ।
भाई-भाई ना लड़ी, घर ऊ सरग समान ।।

जबहि बाप डाही भइल, अनुजो का अभिमान ।
'शुभ' तबे से बिगड़ गइल, डुब गइल खान्दान ।।

ममता माई का भइल, चाहे पूत गँवार ।
पूत सपूत कपूत ला, बाटे एके प्यार ।।

बाबु का दिन रात भइल, धन के खाली चाह ।
पुत चाहे कपूत भइल, बाप का न परवाह ।।

बाप लागि सपूत उहे, धन कतहीं से लाय ।
घर चाहे जेहल बने, भा फाँसी पड़ जाय ।।

मातपिता भरमाइ के, सरवन गइल कहाय ।
साँचा सरवन ना भइल, नोंच-नोंच धन खाय ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

माई तड़पत चल गइल, ना केहु का ध्यान ।
बड़का हमर ना आइल, तड़पत जाता प्राण ।।

माई डँहकत चल गइल, सरवन बात छुपाय ।
का सरवन तब ऊ बनी, लोभे गइल भुलाय ।।

जवन माय भिखइन भइल, अँचरा दिहल पसार ।
दिनो रात विनती कइल, देवन के गोहार ।।

खुद जागल रह जाय जे, बाबु के दे सुताय ।
भींजल पर जे खुद सुते, माई उहे कहाय ।।

परवश में माई भइल, जे केहू का हेत ।
मनवा अब भरमत गइल, ना खुद गइली चेत ।।

मात-पिता भरमाइ के, पुत जे बनल सपूत ।
अन्त समय पछताइहें, तड़पत रहिहें पूत ।।

कलि के ईमानदार ह, जे घोखा दे जाय ।
काम भर ऊ सटल रहे, निकलत काम पराय ।।

विपत में अब इयार के, शुभ-शुभ रहल विचार ।
हरमेश 'शुभ' विचार से, करत रही उपचार ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

हीरा के ना मोल बा, कुँजड़न का बाजार ।
उहाँ पूछ ना बा कबो, का करब व्यापार ।।

कटुभाषी दुष्टा छली, जानलेवा ह जान ।
एह सबसे अलगे रहीं, जीअते लिही प्राण ।

साँप घरो में पाल के, दूध पिआई रोज ।
विख न ओकर घटी कबो, बढ़ते जाई रोज ।।

घर स्वामी उहे भला, नैतिकता के बोध ।
घर मालिक ऊ का बनी, नांहि नीति के बोध ।।

घर मालिक ऊ का बनी, ना जेकरा इमान ।
घर मालिक के बा सुनी, ईमाने पहचान ।।

घर मालिक के चाह हो, सब लइकन पर नेह ।
नेह बराबर ना भइल, का उ चलइहें गेह ।।

घर मालिक के मित अगर, दगाबाज जे होय ।
कब फाँस गरे डार दी, सशंकित हिया होय ।।

कुल्टा नारी मिल गइल, पति मूरदा समान ।
जिनगी भर भोगत रही, लाज शरम अपमान ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

ना तोहर होई कबो, बा जे धोखाबाज ।
ना कबो ओकरा भइल, भीतर तनिको लाज ।।

समय-समय परखत रहीं, भाईयन क प्यार ।
खोट कहीं गर मिल गइल, झट से लीं सम्हार ।।

स्वारथी ना हो सके, परमारथी तु जान ।
फेरा खाली समय के, हो जाई पहचान ।।

टिलवा से अब दूर रह, ना ओकर विश्वास ।
ना कबहूँ ऊ हो सकी, तोहर आपन खास ।।

जब तक काम सटल रही, निकलत होय फरार ।
कपटी के हऽ रूप इहे, मत बनिह तू गँवार ।।

टिलवा का टिलवा मिले, करे न दोसर बात ।
चापलुसी में दिन रात, बा टिलवा अगरात ।।

आगी में ह घीव दिहल, चुंगलनो के काम ।
फड़के-फड़के ऊ रही, बाकी सब बदनाम ।।

परवाह त तबहीं भइल, जबहि भइल विश्वास ।
आपन ना अब रह गइल, जवने खासम खास ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

काँच त टूटल ना जुड़े, तइसे कपटी जान।
एक बेरा गर टुट गइल, ना जूड़े पहचान ।।

लीखे-लीखे जे चले, भले गलत ऊ होय ।
कलि के उहे सपूत बा, सही कपुत जे होय ।।

लीखे-लीखे जे चलस, हउअन उहे कपूत ।
लीख छोड़ के जे चले, जानऽ उहे सपूत ।।

जीवन जब संगे बितल, तब काहे अपमान ।
अग्निदान गर ना भइल, काहे सिंदुरदान ।।

गाँव-जवार सबहिं कुढ़ल, अइसन पति ना होय ।
पिण्डदान गर ना भइल, का गति ओकर होय ।।

सावन बरिसे बादरा, रिमझिम करे फुहार ।
पिया बसे परदेश में, छछनत जीव हमार ।।

रात कटे ना बिन पिया, सुना सेज बरसात ।
सिहरन होत अपार बा, कइसे कटिहें रात ।।

गरज रहल बा बादरा, धक-धक करे करेज ।
चम-चम चमकत बिजूरी, सुना पिया बिन सेज ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

तड़प रहल बा मन सखी, ना पियवा बा संग ।
खाली गइल सिंगार सब, आ मेहदी के रंग ।।

सावन के सुख ना मिलल, पियवा बसे पहाड़ ।
मनवा त बेचैन भइल, रात सुदी अन्हार ।।

का बतलाई साजना, सावन के बरसात ।
सिसक रहल बेयार बा, सिहरत बाटे गात ।।

भादो के अब का कहीं, गरजत बा घनघोर ।
एने हिया में वेदना, नाचत बा वनमोर ।।

अंगना दुअरा गिल भइल, बिछलत पाँव हमार ।
सड़िया मइल भिलोर बा, के सुधि लिही हमार ।।

पिया बिना बरसात में, चुनरी भइल बदरंग ।
कइसे मेटकी रंग अब, बदली चुनर के रंग ।।

कहत बने नाहिं दुखरा, तड़पत हिया हमार ।
जइसे मछरी जल बिना, नाहिं प्राण आधार ।।

कबहुँ बिजुरी चमक पड़े, शीतल बहे बयार ।
पुरवइया झर-झर बहे, ना पिउ संग हमार ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

घहरल भादो के घटा, तिरिया मन घबराय ।
चिहुक उठल तब गोरिया, पिया हिया लपटाय ।।

दादुर धून के सुन के, बटुक गइल घबराय ।
जइसे पण्डित वेद के, मंतर पढते जाय ।।

करिया कुचकुच मेघ के, देख किसान ठठाय ।
काँधे हर बैल संगे, खेते दउड़ल जाय ।।

चिरई चारि प्रकार क, गुणो रहल विलगाय ।
पहिला चिरई ऊ भइल, जहाँ जनम मर जाय ।।

दोसर चिरई ऊ भइल, पिंजड़ा छोड़ के जाय ।
बाहर कतनो नीक बा, ना तनिको सोहाय ।।

चिरई तिसरा ऊ भइल, पलखत पा उड़ जाय ।
अब पिंजड़ा के मोह ना, उहे मुक्त हो जाय ।।

चउथा चिरई ऊ भइल, पिंजड़ा जे खोल दे ।
अब चिरई के चाह जे, जवन चाहे कर ले ।।

लमहर अपना के कबो, ना लमहर कह जाय ।
जे खुद के लमहर कहे, लमहर ना हो पाय ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

कलयुग के शैतान जे, खुदंहि बने भगवान ।
महिमा ओकर का कहीं, काथी करीं बखान ।।

कलयुग के शैतान जे, खुदहि बने इंसान ।
दुम डोलावत ऊ फिरे, झूठा बा अभिमान ।।

मुँहबई त बा आ गइल, देख दुनिया क रीति ।
बापो पुत से हो गइल, बे मतलब बिपरीत ।।

एक बेटा से नेह बा, दोसरका से डाह ।
ई कलयुग के रीत हऽ, का करबऽ परवाह ।।

नेता के सब नेते ह सकलो कुल परिवार ।
हित संबन्धी सब भइल, ई बूझीं सरकार ।।

सरधा हिया के फूल ह, ना सगरो भेंटाय ।
जहाँ हिया में प्रेम बा, ओही में खिल जाय ।।

जीवन जेकरा संग में, शुभ ओकर अपमान ।
बाल बुतरू कहवाँ गइल, ना तनिको बा भान ।।

नीके दिन गर आ गइल, मत कर तू अभिमान ।
पल-पल के सुधि लेत बा, समय बड़ा बलवान ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

जे जन सुख का खोज में, करे पराया आश ।
घटहिं में कस्तुरी बसल, मिरगा सूँघे घास ।।

लोटा डोरी छोड़ के, कुँआ पास जे जाय ।
लवटी घरे पिआसले, पानी ना भेंटाय ।।

तोहर ना होई कबो, जे जन धोखाबाज ।
ओह खुदगर्जी का कहाँ, बाटे तनिको लाज ।।

लाज लजाइल बा सुनऽ, खुदगरजी आचार ।
खुदहीं स्वारथ में रही, खुदगरजी लाचार ।।

गंगा नहाइ करी, बा मन में अभिमान ।
का मूरख भा पण्डिता, दूनो ह एक समान ।।

गंगा नहाइ के का करी, मन में भरल विकार ।
ओहसे त मछरी भला, जल में करत विहार ।।

तीरथ जा के का करी, मन में भरल विकार ।
जइसे मिरगा कस्तुरी, खोजत जंगल झाड़ ।।

माला भगवा का करी, छापा तिलक लिलार ।
ओह से त बैला भला, गले म कंठाहार ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

जीवन साँचा बा सुनऽ, भइल ओकरे भान ।
मउगत के कहवाँ भइल, मुरदा का पहचान ।।

साँचा जीवन, मौत ना, पक्का बा ई बात ।
तब काहे सुन मौत के, जियरा बा घबरात ।।

असली कायर ऊ भइल, मउगत से डर जाय ।
मौत जब होइबे करी, तब काहे डेराय ।।

लमहर हो के का कइल, जब विचार बा छोट ।
ओह से त लागत रही, अब समाज में ओट ।।

नीयत से नीयति बने, नीयति से सब काम ।
'शुभ' ना होय नीयत बिनु, जग में कवनो काम ।।

माया का एह जाल से, निकाले ह करतार ।
नर ऊ माया का बुझी, लोभे भइल गँवार ।।

एह मयावी जगती में, ऊ डूबे दिन रात ।
लोभ जेकरा में भरल, तड़प मरी दिन रात ।।

अपना सुख के तेज के, सुने पराया आह ।
साँचा मानव बा उहे, दीनन के परवाह ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

ऊँचा टीला देख के, जे कुछ देवे दान ।
ओहसे तऽ उहे भला, दीनन के कल्याण ।।

अपराधी हरदम करे, टकोरी के विचार ।
बेसाहत टंटा फिरे, हरदम बे आधार ।।

भाई से भाई कहे, का तोहर औकात ।
अइसन गति त कर देहब, पल में होइब मात ।।

हित-सम्बन्धी में भइल, शतरन्जी के खेल ।
हमहूँ उहे कर देहब, तब होई धुरखेल ।।

जे खुदहिं अन्धकार में, का करिहें प्रकाश ।
कहत सुनत जिनगी बिती, होत रही उपहास ।।

विद्वान आ बुधिमान में, अन्तर लमहर जान ।
नजर पसार के देख ल, हो जाई पहचान ।।

किताबी विद्या बाँच के, जे जन भइल विद्वान ।
ना बुद्धि से भेंट भइल, का बनिहन बुधिमान ।।

व्यवहारिक ज्ञान बिना, नाहिं भइल पहचान ।
करमो अइसन कर चलल, लागे पशुवत जान ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

जे अधर्म का राह पर, मत दऽ ओकर साथ ।
धर्म का राह जे चले, ओही माथे हाथ ।।

ज्ञान विखेरत ऊ फिरे , अग्यानी दिन रात ।
पढ़ल-लिखल मूरख सुनऽ, गरबे बा अगरात ।।

जौहर तऽ उहे बूझी, परख जेकरा होय ।
ऊ कदर का कर सकिहें, दूर परख से होय ।।

'शुभ' ओहसे ऊ नीक ह, भले अनपढ़ महान् ।
ऊँचाा खाला ना चले, उहे भइल इन्सान ।।

जे ऊँचा पद पाइ के, नीच करम पर जाय ।
बिना सींग आ पूँछ के, ऊ नर पशु कहलाय ।।

पढ़ल-लिखल बुधिमान जे, जस सोना मे सुगंध ।
अगर बुद्धि से हीन बा, फइलावत दुर्गन्ध ।।

अपना से विद्वान बनी, लोग कही नादान ।
खुद क ज्ञान गर ना भइल, बनल रही अन्जान ।।

अपना से अन्जान जे, तबहूँ बुझे विद्वान ।
हीरा छोड़ काँच गहे, मूरख के पहचान ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

भाई भाई से लड़े, बीच पड़ल सरदार ।
भाई गर जो ना बुझल, बूझीं निपट गँवार ।।

भाई के हक मार के, गरबे भइल अचेत ।
जिनगी भर पछता मरी, अउर रही बेखेत ।।

अंगजाई के केहू, कहीं करी अपमान ।
बूझीं दुनिया के हवे, ऊ लमहर शैतान ।।

नैतिकता ओरा गइल, मनसा गइल बुझाय ।
का केहू नैतिक बनी, जौ घुन संग पिसाय ।।

बेटा-बेटी में जहाँ, गइलक भेद बुझाय ।
विनाश माथे चढ़ गइल, काल चहेटत जाय ।।

नीति अनीति कहाइहे, ना परहित ला होय ।
नीति अनीति उहो हवे, खुद खातिर जे होय ।।

दानवता के देख के, अकिल गइल छितराय ।
मानवता का रूपे में, दानवता मिल जाय ।।

छली छल कतनो करे, राखऽ नीक विचार ।
छली से प्रभु छल करे, छल के देवे भार ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

माया का दरियाव में, तेज बहत बा धार ।
अग्यानी उब चुब करे, ज्ञानी का पतवार ।।

जे मन का वश में भइल, तने भइल उन्माद ।
'शुभ' तन मन जब एक भइल, जिनगी भर अवसाद।।

बाप बुलावा भेजिया, बड़का दउड़ल जाय ।
अनुज का नीक ना लागे, नालायक कह जाय ।।

कलयुग के ई रीत बा, एहि में बूझे जीत।
भाई के बा प्रेम अब, जस बालू के भीत।।

अनीति नीति कहाइहे, जनहित ला गर होय ।
नीति अनीति कहाइहें, जे खुद खातिर होय ।।

हत्या कइल अनीति हऽ, लोभ वशे जे होय ।
देश हित ला अगर भइल, ऊ अनीति ना होय ।।

रीति कलि के इहे सुनऽ, वास धने में घोर ।
अन्त समय जब आइहें, मन पछतइहें तोर ।।

चाहे जइसे होत बा, अब धन के बरसात ।
नीक कहाता ऊ करम,का केहु करी बात ।।

आपन आपा छोड़ि के, सुने विरानी बात ।
उहे मूढ़ अनाड़ी बा, गलती कर अगरात ।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

नैतिकता का आड़ में, करे अनैतिक काम ।
झूठा ढोंग रचाइ के, झूठ करे अभिमान।।

जिनगी भर करते रहल, हरदम नीति क बात ।
कलि जब माथे चढ़ गइल, अनीति नीति बुझात ।।

करम भोग भोगहिं पड़ी, पक्का बा 'शुभ' जान ।
काहे पछतावा करे, हिम्मत कर इंसान ।।

टारे से ना टर सके , करम के फल तहार ।
आगे ऊ अइबे करी, का सोंचेल इयार ।।

आवत दुख के देख के, काहे तू घबराय ।
सुखवो बा पाछे पडल, समय चकर कहलाय ।।

नेह करऽ भगवान से, जे बूझे सब बात ।
हर पल के खबर जे ले, काहे तू घबरात ।।

करमे तहरा हाथ में, फल नाहीं इन्सान ।
करम नीक करते चलऽ, फल देवे भगवान ।।

रूखा सूखा खाई के, नाम हिया में लेत ।
ओकर जीवन सफल बा, ना कबहूँ बेखेत ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

मद धन के जबहीं भइल, तबहीं भइल अचेत।
मतिया मद में हो गइल, बा ओकर बेखेत।।

खाली हाथे आइ के, खाली हाथे जाय ।
मकसद पूरा ना भइल, नाहक जीवन जाय ।।

राजा भक्षक जब बनी, जनता तब कंगाल ।
हाल देश के का होई, जनता तब बेहाल ।।

राजा बनिया प्रेम के, राखी भगत दलाल ।
दुर्दिन सब खतम होई, जनता मालेमाल ।।

खाली हाथे आ गइल, खाली हाथे जाय ।
पाके नर तन का गइल, जे खाली चल जाय ।।

दिल दिमाग में भेद बा, जाने उहे महान् ।
मनवे के जे दिल बुझे, होला कपटी जान ।।

जे हिया के बात सुनी, ऊ ना कपटी होय ।
जे मन का वश में रही, बूझऽ कपटी सोय ।।

कलयुग में अवगुण भरल, गुण बा एगो महान् ।
उल्टा-पुल्टा होय सब, सस्ता आतम ज्ञान ।।

भरल समुन्दर नीर बा, का बा ओकर दाम ।
जब तक बादल ना बनी, ना बा ओकर काम ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

पहुँचल-पहुँचल लोग के, बहकल-बहकल बात ।
छलकल-छलकल चाल बा, चसकल-चसकल बात ।।

परहित ला जे ना करे, जग में कवनो काम ।
जीअते बा उ मर गइल, का ओकर बा काम ।।

झूठा ढोंग रचाइ के, लिहल कमण्डल धाय ।
तिलक छाप लगाई के, खाला खाला जाय ।।

मन मछरी तन साफ कर, घूमे सगरो जाय ।
खुदहि लमहर कहाइ के, अपने पर अगराय ।।

'शुभ' सन्तन के मान ना, पापी के बा मान ।
संत सभे पाछे छुटल, पापी का अभिमान ।।

विद्वानन के मान ना, अग्यानी के मान ।
देश कहाँ से तब बनी, जग में इहो महान ।।

का मतलब दीपक जरे, भीतर बा अन्हार ।
घट के दीपक छोड़ के, बाहर में उजियार ।।

भीतर दीआ ना बरल, बाहर से का होय ।
घट में दीआ बार ले, बाहर में मत खोय ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

हटे दीप यज्ञ ज्ञान क, करत अज्ञान विनाश ।
अज्ञानता जइसे मिटल, दुनो ओर परकाश ।।

दीप जरवले का भइल, भीतर में ना जोत ।
अज्ञान अन्हार न गइल, दीप जरे का होत ।।

घट में दीआ बार के, बाहर में तू बार ।
ज्ञान-दीप घट में बरे, जो चाहे उजियार ।।

ज्ञान- उजाला होय जब, अज्ञानता ओराय ।
ज्ञान- उजाला में रहे, कबो न गोता खाय ।।

ज्ञान-दीप से दूर जे, नर तन बा बेकार ।
बिना ज्ञान के जे रहल, जनम-मरण धिक्कार ।।

साँच के नित नमन करीं, दिल से बारम्बार ।
नमन करीं ओ लोग के, हियरा में करतार ।।

नरतन बेड़ा बा मिलल, साँस मिलल पतवार ।
अब का सोंचत बावरा, हो जा भव से पार ।।

बेड़ा तन तोहार ई, डूबत बा मझधार ।
फूँक-फूँक के डेग धर, तबहीं उतरब पार ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

कण-कण में जब दिख पड़े, झलकत नूर अपार ।
बूझऽ जे 'शुभ' खुल गइल, अब मुक्ति के दुआर ।।

घट-घट में साईं बसल, तब काहे तकरार ।
लोभ मोह का फेर में, बन गइल तू गँवार ।।

बाहर दीप जराइ के, भीतर चाह अँजोर
कइसे पूरण होइहें, चाह जवन 'शुभ' तोर ।।

शान्ति-शान्ति सब कहे, शान्ति घट में जान ।
एकरो का परमाण बा, खुद घट में पहचान ।।

भीतर से नाता भइल, बाहर के तब जाय ।
उहे पावे परम पदऽ, ई लोक छूट जाय ।।

खोजन चाहऽ ईश के, गुरू चरणन में शीष ।
किरपा से त मिल जाई, ई तहरा बख्शीष ।।

सब घरे कुआँ बा बनल, पानी भरल अपार ।
पिआसे मरत चल गइल, मूरख लोग गँवार ।।

नीक-नीक बा मिल गइल, नर तन ई तोहार ।
कइसन मतिया बन गइल, हो गइल तू लबार ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

नीक-नीक बा मिल गइल, 'शुभ' नर तन तोहार ।
अबकी पासा ना पड़ल, डुबी नाव तोहार ।।

काम-क्रोध मद लोभ के, पक्का दुश्मन जान ।
साँचा साईं भीतरे, कर लऽ तू पहचान ।।

थाह अथाह क मिल गइल, कटल भरम के जाल ।
'शुभ' साई का आश में, भइल जिया बेहाल ।।

इतरो वाला का करी, मछुआ हाटे जाय ।
लागी मोल ना इतर क, खाली हाथे आय ।।

केहू ना कुछ कर सके, समय करे से होय ।
तबहीं ई बलवान हऽ, बात कहे सब होय ।।

समय का संग जे चले, उहे ह चतुर सुजान ।
बुद्धि का वशे ना रहे, भगत भा मुरख जान ।।

नेह भइल सब बन गइल, नेम धरम आचार ।
नेह बिना बेकार बा, पड़ल फिका संसार ।।

निर्धन खातिर मेवा ह, सूखल पाकल अन्न ।
धन का मद में बा बसल, हर पल धनी के मन ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

नीक-नीक 'शुभ' मिल गइल, नरतन ई तोहार ।
तबहूँ कइसन बा बनल, ई तोहर कुविचार ।।

क्षणभंगुर तनवा मिलल, मत कर तू अभिमान ।
काल्ह-आज उहाँ इहाँ, 'शुभ' जीवन ह महान् ।।

मुरख जब धनवान भइल, 'शुभ' अपनन से दूर ।
अभिमाने गरजत रहल, चाहे चकनाचूर ।।

जीवन समय दूनु एक ह, 'शुभ' पल-पल चल जाय ।
भेद जीवन जिनगी के, ना केहु का बुझाय ।।

जीवन ई अनमोल बा, प्रेम के ल अपनाय ।
दौलत सब इहवें रही, जीवन छोड़ पराय ।।

नेह गइल सब कुछ गइल, गइल धरम ईमान ।
'शुभ' धरम ईमान गइल, का बनिहें इन्सान ।।

देहियो त इहवें छुटी, करमे संगे जाय ।
'शुभ' अबहूँ से चेत लऽ, काहे मन भरमाय ।।

साँचा हीत उहे भइल, हियरा से बा मेल,
कबहूँ हित 'शुभ' ना बनी, खेले छलिया खेल ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

मनवा का संसार में, ना हियरा के पूछ ।
हिया से हिया तउल ले, मनवा बाटे तुच्छ ।।

मनवे से इहलोक बा, हियरा से ऊ लोक ।
मनवा से मृतलोक ह, हियरा से परलोक ।।

हियरा का संसार में, सुख शान्ति भंडार ।
मनवा का संसार में, 'शुभ' दुख भरल अपार ।।

मन से भव दुनिया भइल, जेमे नीर अपार ।
छल कपटो बाटे भरल, ना निकले के वार ।।

खुदगरजि व्यवहार से, दुखिया बा संसार ।
परोपकारी बा कहाँ, लोगवा के विचार ।।

खुदगरजि व्यवहार से, लाज लजाइल यार ।
खुदहि स्वारथ में रही, खुदगरजी लाचार ।।

खुदगरजी का रीत से, टूट गइल अब प्रीत ।
अब का प्रीत बढ़ाइहें, हो गइलन जब तीत ।।

खुदगरजी खुदगरज में, कूटनीति फइलाय ।
माई-बाप भाई के, अलग-अलग करवाय ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

खुदगरजी भाई भइल, कलह के बिया बोय ।
माय-बाप गर ना बुझे, अलग सपुत से होय ।।

खुदगरजी खुदगरज में, जाय सहोदर भूल ।
कुल खान्दान सहितही, डुब जाय संग मूल ।।

खुदगरजी रावण भइल, गइल सहोदर भूल ।
नाश करा के सब गइल, हो गइलन निरमूल ।।

खुदगरजी खुदगरज में, आपन आपा खोय ।
मनवा में अभिमान बा, का कर सकिहें कोय ।।

खुदगरजी खुदगरज में, हरदमे परेशान ।
एही से ऊ बनत गइल, लमहर बेईमान ।।

खुदगरजी खुदगरज में, हरदमे पेरशान ।
ना जहिया गरज पूरी, बन जाई शैतान ।।

तज देवे खुदगरज के, जे परहित ला भाय।
ओइसने इन्सान के, युग-युग नाम लियाय ।।

'शुभ' खुद सुख खातिर केहू, पर के हड़पत जाय ।
मानवता के छोड़ के, दानवता अपनाय ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

जगत में जे अचेत बा, भीतर चेतन पूर।
सच्चाई का राह में, बाटे ऊ भरपूर ।।

मेहनती तू खूब बन, हियरा में हरि नाम ।
सफल जीवन के ह इहे, भजन करऽ निष्काम ।।

बोध जेकरा हो गइल, निपूतर मत बखान ।
संतोषी हरदम रही, ई ओकर पहचान ।।

झूठ-साँच इहाँ-उहाँऽ, घुम-घुम बोले बोल ।
पाछे त सब लोग कही, मूरख हऽ भंडोल ।।

काँचे डोरी पर टिकल, पुरा जगत के भार ।
एने ओने 'शुभ' मत कर, डूब जाइ संसार ।।

दरवाजा खिड़की कहाँ, पियवा का घर मांहि ।
तेज गेठरी मोटरी, घुसऽ पिया घर मांहि ।।

ऊपर परवत सातवाँ, पियवा बसल तहार ।
'शुभ' का बइठल बावरा, बाटे खुलल दुआर ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

नरतन पा के 'शुभ' केहु, भइलक ना भव पार ।
जनम-जनम पछता मरी, तड़पत रही इयार ।।

ताला बा 'शुभ' खुल गइल, का सोंचे तू यार ।
ज्ञान विमान त मिल गइल, पिंजड़ा खुलल तहार ।।

देवता सब तरस रहल, मानुष तन ला यार ।
मानुष तन 'शुभ' मिल गइल, तू का भरमे यार ।।

अबहूँ से ना चेत लऽ खोज ल आतम ज्ञान ।
पूरा सतगुरू खोज लऽ, 'शुभ' मिलिहन भगवान ।।

भरमे में जे फँस गइल, भइलक खुद से दूर ।
आवागमन का चकर म, 'शुभ' भइलक मजबूर ।।

नर तन पाके गर केहु, ना भइलक भव पार ।
बेर-बेर तब ऊ गिरी, चौरासी का धार ।।

भवसागर न अउर कहीं, मनवे के 'शुभ' जाल ।
नाहक मन हरदम करे, तहरा संग बवाल ।।

भव के 'शुभ' नइया मिलल, नर तन ई तोहार ।
किरपा से बा मिल गइल, सांसो ई पतवार ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

अद्‌भुत ई नइया मिलल, आ अद्‌भुत पतवार ।
केवट शुभ सतगुरू मिलल, नइया जाई पार ।।

भवसागर का भरम में, फँसत गइल संसार ।
भरम मेटावे सतगुरू, बूझीं सब नर नार ।।

जीवन जीअल हऽ कला, जे खुद के पा जाय ।
खुद से 'शुभ' जे दूर सुन, का जीवन जी पाय ।।

साहेब साँचा एक बा, लोग त कहे अनेक ।
साँचा सतगुरू जब मिले, मिटे भरम के टेक ।।

साँचा साथी ऊ हवें, हरदम साथ निभाय ।
जहिया साथ उ छोड़ दे, तू मुरदा कहलाय ।।

साहित तऽ दरपण भइल परखी परखनहार ।
'शुभ' नर उ का परखि सकी, मतिया भइल गँवार ।।

नोखा रूप तोहार बा, झाँक देख ना यार ।
देख पलाशी फूल के, हो गइल तू गँवार ।।

नोखा रूप 'शुभ' यार के, भीतर बा जे यार ।
बाहर तू भरमत फिरे, भीतर करत पुकार ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

दरिया में टिपका गइल, खुद के गइल भुलाय ।
टिपका ना 'शुभ' रह गइल, खुद सागर बन जाय ।।

टिलवा से अब दूर रह, ना ओकर विश्वास ।
ना कबहूँ 'शुभ' हो सकी, तोहर आपन खास ।।

धनवो कुछ संचित करऽ, अंतहिं आवे काम ।
विपत काल जब आइहें, धन देवे आराम ।।

धरम अधरम धनवे से, दूनो होला भाय ।
तबहिं धन से धरम भइल, नीके भइल सुभाय ।।

धरमो होला भाव से, होत अधरम कुभाव ।
जहाँ मने सद्भाव बा, उहाँ धरम के ठाँव ।।

बीचे धरम अधरम का, खाई लमहर जान ।
मानवता दानवता ह, एकर नीक पहचान ।।

देहिया भव के नाय ह, सांसो बा पतवार ।
सांस डांड़ चलाई के, 'शुभ' नइया कर पार ।।

दीपे यज्ञ दिपावली, दीपक जरे हजार ।
बाहर में उजियार बा, भीतर 'शुभ' अन्हार ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

क्षण-क्षण सांसो जात बा, मन में भरल विकार ।
मन के निर्मल जे करे, 'शुभ' उहे भइल पार ।।

जे मन का वश में रहे, संत ना कबहुँ होय ।
संत जान ऊ उहे हवें, मन पर काबू होय ।।

कायरता से दूर जे, मन पर रखे लगाम ।
संत ओही के जान ल, करम करे निष्काम ।।

संत हिया के बात सुन, मनवा से जे दूर ।
जीवनो शांति में रही, 'शुभ' नाहीं मजबूर ।।

हीरा परखे जौहरी, जहाँ कहीं भी होय ।
'शुभ' जौहर ऊ का परखि, काँसा-पीतल ढोय ।।

माई बेटी जब रहल, शोभल घरो दुआर ।
बेटी जब माई भइल, रच दिहलस सन्सार ।।

एहि से जग जननी भइल, बेटी जानऽ यार ।
सृष्टि क आधार भइल, परगट बा संसार ।।

माई तड़तप चल गइल, ना केहू का कान ।
बड़का अबो ना आइल, तड़पत जाता प्राण ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

संत हवें परमारथी, परहित ला मिट जाय ।
असंत हवन स्वारथी, अपने ला हउआय ।।

असंत लोभे साथ दी, निकलत होय फरार।
पछता के 'शुभ' का होइ, तू कहइबऽ गँवार ।।

लमहर आतम ज्ञान से, ना बा कवनो ज्ञान ।
ज्ञान जेकरा हो गइल, पद पवलक निरवान ।।

आतम तीरथ से बड़ा, ना तीरथ बा जान ।
आतम तीरथ रह गइल, पवलक पद निरबान ।।

नाव देख मझधार में, काँपत सबहीं गात ।
रहि रहि उठे तुफान जब, बेढ़ा पड़ो जमात ।।

गजब के ई तुफान बा, नइया डगमग होय ।
धक-धक करे करेजवा, ना लउकत 'शुभ' कोय ।।

नाविक नइखे संग में, ना सूझत बा बात ।
'शुभ' के पार उतारिहे, कठिन भइल बरसात ।।

गजब-गजब के चोर सब, लूटेला तइयार ।
मनवा अब अचैन भइल, कइसे उतरीं पार ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

काम क्रोध मद लोभ सब, चोर भइल तइयार ।
लूटत बीचे राह में, निकले के ना बार ।।

छेद भइल जो नाव में, बनलो बिगड़ी काम ।
पार होय के के कहो, जीवन होय हराम ।।

नाविक गर ना संग में, नाव बिना पतवार ।
'शुभ' सुनऽ तेहि नाव के, केहि उतरिहें पार ।।

नाव फँसल मझधार में, कइसे उतरब पार ।
सतगुरू केवट जब मिली, तबहीं होइब पार ।।

आवत जात ए सांस में, 'शुभ' तोहर बा प्राण ।
बइठल एही में बाड़न, तोहर जे भगवान ।।

आवत जात इ सांस बा, भगवन के आशीष ।
जनमे से ई बा मिलल, 'शुभ' नीके बख्शीश ।।

खबर त पल-पल लेत बा, का चिन्ता के बात ।
चिन्ता छोड़ चिन्तन कर, भवसागर तर जात ।।

आवत जात ए सांस में, नाविक बा तोहार ।
नीके बइठऽ नाव में, भवसागर कर पार ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

आवत जात ए सांस में, 'शुभ' आनंद अपार ।
इहे जगत के सार बा, बाकी सबहिं असार ।।

सांसे से ई जगत बा, इहे जगत के प्राण ।
सांस बिना जग निर्धना, शुभ बा ई धनवान ।।

गजब के बा ई दुनिया, गजब बा व्यवहार ।
गजब-गजब के लोग सब, गजब भइल संसार ।।

आवत जात ए सांस के, बा कीमत अनमोल ।
बाकी सब के मोल बा, एकर मोल ना तोल ।।

सांसे तक सब कुछ भइल, सांस बिना बेकार ।
सांस गइल शुभ सब गइल, ना हमार तोहार ।।

नर तन भव के नाव हऽ, सांसे हऽ पतवार ।
सांस डांड़ चलाई के, शुभ नइया से पार ।।

सांसे पर तनवो टिकल, सांस बिना बेकार ।
देह मांस के लोथड़ा, सांसे बा करतार ।।

आवत जात ए सांस के, का मतलब बा यार ।
शुभ भव के ई यान हऽ, ना भाँथी लोहार ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

साँचा शब्द ए सांस में, शुभ भीतर पहचान ।
सतगुरू भेद बताइहे, मिल जइहें भगवान ।।

ना भाँथी लोहार के, आवत जात ह सांस ।
एही में अब साई पर, खुद कर लऽ विश्वास ।।

ज्ञान-दीप भीतर बरे, बाहर में परकाश ।
घटहिं विराजत साईं ब, तोहर आपन खास ।।

आवत जात ए सांस के, परखे परखनहार ।
बइठल एही में बाड़न, तोहर जे करतार ।।

साथी तोहर ऊ भइल, अंतहुँ साथ निभाय ।
साथी जहिया छोड़ दे, तू मुरदा कहलाय ।।

साथे तहरा जे रहे, जे आकाश पताल ।
ना कबो ऊ छोड़ सके, हरदम तीनो काल ।।

असली साथी ऊ भइल, हरदम साथ निभाय ।
चाहे तू घर में रहे, भा जंगल में जाय ।।

घट देवल के छोड़ के, बाहर पूजन जाय ।
बाहर ना कुछ मिल सके, बिरथा उमर गँवाय ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

बूँद के चाहत एक बा, सागर में मिल जाय ।
तइसे चाहत जीव के, साई मांहि समाय ।।

जान सकऽ तऽ जान लऽ, घट ही में भगवान।
फेर का जनब बावरा, चल जइहें जब प्राण ।।

बा जिनगी अनमोल ई, कहाँ एकर बा मोल ।
जब तक घट में सांस बा, तबहीं तक बा मोल ।।

एह मायावी जाल से, निकाले ह करतार ।
ऊ माया का बुझ सकी, लोभे भइल गँवार ।।

सरधा हिया के फूल ह, ना सगरो भेंटाय ।
संतोषी जन धीर बा, हियरा हरि के नाय ।।

सरधा हिया के फूल ह, सबतर ना भेंटाय ।
प्रेम सरोवर बा जहाँ, ओही में खिल जाय ।।

विद्वानन के मान जब, नैतिकता आ जाय ।
राजा परजा सब सुखी, अमन चैन हो जाय ।।

विद्वानन के मान ना, मूरख के बा मान ।
विद्वान त पाछे भइल, मूरख का अभिमान ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

मनुवा अक-धक में पड़ल, नइया बा मझधार ।
केवट अब तक ना मिलल, कइसे उतरब पार ।।

घट में अंगचारी बा, ना छोड़े ऊ साथ ।
जहिया साथ उ छोड़ दे, अब के धरिहें हाथ ।।

निमन दिनवा उहे हवे, जब ले घट में सांस ।
पूरा जग अब छान ले, भा तीरथ में वास ।।

आवत जात ए सांस में, छलकत प्रेम अपार ।
जे जन चाखे प्रेम रस, से ही उतरे पार ।।

आवत जात ए सांस में, साजन करे पुकार ।
नयनन के बा कोठरी, ता में सेज हमार ।।

शुभ उहे होसियार बा, ना कवनो बा डाह ।
तरला के ना बा फिकर, ना कवनो परवाह।।

जीवन क्षण भंगूर बा, जइसे पुरइन बूंद ।
पल भर में खतम होई, ढरक पड़े जस बूंद ।।

आपन निन्दा जे सुने, पर के जे गुणगान ।
उहे लोग जग में भइल, बा पक्का इन्सान ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

पीछे में निन्दा करे, आ मुँह पर गुणगान ।
ऊ कबहूँ ना हित बनी, दुश्मन होई जान ।।

यार बनाई सोंच के, जब पूरा इतबार ।
तुनुक मिजाजी यार से, हरदम पड़ी दरार ।।

यार बनाई सोंच के, निमहत जिनगी पार ।
ना कवनो इतबार बा, दुनिया के सरकार ।।

यार कहीं बैरी भइल, ना निमही सरकार ।
बात-बात में तब रही, आपस में तकरार ।।

यारी करीं त सोंच के, राखीं नीक विचार ।
मत थोपी आपन कुछो, हो जाई तकरार ।।

ना इहाँ केहु हीत बा, ना बैरी बा जान ।
करनी अइसन अब करऽ, राखऽ ई पहचान ।।

यार कहीं बैरी भइल, पल-पल बिगड़ी बात ।
ना जाने हो जाइ कब, तहरा संगे घात ।।

खूबे सोंच विचार के, हितई कर तू जान ।
हितई शरबत नून जस, ई बाटे पहचान ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

यारी साँचा यार के, निमहत हरदम जाय ।
यारी कवना काम के, जहाँ फाँड़ पड़ जाय ।।

आपन जग में के भइल, खुद हियरा से जान ।
मन से मन के तउल ले, हो जाई पहचान ।।

यारी कपटी यार के, बूझ ले विख समान ।
साँचा यारी बा अगर, अमरित जस तू जान ।।

हिया हिया का मेल बा, मन के चाल अनेक ।
जहाँ हिया से मेल बा, ऊ साधक केहु एक ।।

हिया हिया का मेल बा, मन का भेद बुझाय ।
मन के साथी जे बुझे, उहे नरक में जाय ।।

मन हियरा में भेद बा, जे नर परखी पाय ।
भेद सरग या नरक के, ओही का बूझाय ।।

मन का चाले जे चले, खुलल नरक के द्वार ।
मेल हिया से बा जहाँ, सरग पुकारे यार ।।

सरग नरक दूनो इहाँ, चाह जवन भेंटाय ।
हाथे तहरे बा दुनो, करमें से पा जाय ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

यारी साँचा यार के, सुख-दुख में परखाय ।
यारी कवना काम के, दुख में छोड़ पराय ।।

साँचा हित ई सांस बा, सुख-दुख साथ निभाय ।
ऊ साथी का काम के, दुख पड़े छोड़ जाय ।।

कपटी हीत के जान ल, जइसे विख के खान ।
पलखत पावत ना चुकी, ले ली तोहर जान ।।

सोंच समझ यारी करऽ, सोंच करऽ इतबार ।
एक बेरा यारी भइल, जीवन भर सम्हार ।।

क्षण में यारी जे करे, क्षण में करे बिगाड़ ।
ऊ मानव कपटी भइल, गटई पर तलवार ।।

नेह करत घाती भइल, देखत बारन ईस ।
ओहु संग उहे होई, फल दीहें जगदीश ।।

मनवा जब डाही भइल, रचल जाल जंजाल ।
सबका के भरमाय के, चहलक करीं कंगाल ।।

सबसे उत्तम नारी ऊ, पति में रहे ध्यान ।
पर पुरूष से दूर रहे, ना झूठ के बखान ।।

बेटी जग जननी हई, जग के ई आधार ।
जग बा इनका से भइल, इनहीं से अवतार ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

नारि झूठ बखाने जे, से कलही कहलाय ।
घर के थीर ना छोड़े, अगिया देत लगाय ।।

कहाँ गइल संस्कृति ब, भारत के उ महान् ।
विश्वगुरू ई देश रहे, साँचा ज्ञान बखान ।।

कहाँ गइल अब देश के, साँच न्याय क बात ।
चापलुसी बा आ गइल, चापलुसे अगरात ।।

गरबे में जे लोग सब, हो जाला विकराल ।
बाकि एक दिन हो जाला, ऊ खूबे बेहाल ।।

जेकर नीच ह भावना, करमो नीचे जान ।
ओकरे लागि बा कहल, असुर अधरमी मान ।।

सच्चाई का राह पर, चलत रही इन्सान ।
सच्चाई के छोड़ अब, बा भटकत शैतान ।।

चिंता दुख के कारण ह, चिन्तन से दुख जाय ।
'शुभ' तू अब चिन्तन करऽ, तबे शांति भेंटाय ।।

जे सुख में चिन्तन करे, अंतहुँ में सुख पाय ।
खाली दुख में जे करे, सुख नाहीं भेंटाय ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

बैर बेसाह के भइल, जग में जे धनवान ।
ओकर गति बा का भइल, देख लेहु इन्सान ।।

चुनरी अबो सुधार लऽ, भुइया ना लोटाय ।
मइल कुचइल त हो गइल, गरबे नाहिं बुझाय ।।

जेकरा खुदहि भान ना, ऊ बाँटत बा ज्ञान ।
उहे मूढ़ अनारी बा, 'शुभ' लमहर नादान ।।

नाना धरम बनाइ के, धरमन के भरमार ।
सार तत्व ना गहि सकल, उलझ गइल संसार ।।

मंदिर खुदा तन भइल, हऽ आतम भगवान ।
निरखीं परखी देख ली, खुद कर लीं पहचान ।।

साँच बखानत ऊ फिरे, जेकरा नाहिं बोध ।
मनमानी करते फिरे, बात-बात में क्रोध ।।

पूरा जगत भरम गइल, ना मिललें भगवान ।
शुभ भीतर अब झाँक ले, हो जाई पहचान ।।

का लेके जाईं उहाँ, साईं का दरबार ।
चुनरी मोर धुमिल भइल, मनवा भइल गँवार ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

गुण अवगुण से बा बनल, 'शुभ' नर तन तोहार ।
अवगुण तज गुण जे गहे, ओकर बेड़ा पार ।।

ना आकाश पताल में, ना मंदिर में वास ।
मन मंदिर में झाँक ले, भीतर प्रीतम खास ।।

दया धरमन के भूल ह, मन में देख विचार ।
प्रेम जहाँ उपजी दया, हरषित मन तोहार ।।

कहत-कहत सब थक गइल, ना मानत बा लोग ।
'शुभ' कइसे खतम होई, मानस भव के रोग ।।

जइसे पुरइन पात पर, पड़ल ओस के बूंद ।
पल में जीवन ना रहीं, ढरक पड़े जस बूंद ।।

छल-कपट में बीत गइल, ई जिनगी तोहार ।
पछतावा शुभ का भइल, खुलल यम के दुआर ।।

पेट काट पूँजी बनल, सकलो कुल परिवार ।
एगो के ढाकन देलऽ, दोसरा के उधार ।।

आगे के अब सोंच लऽ, बनलो बिगड़ी काम ।
युग-युग तक होखत रही नामो अब बदनाम ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

जेकरा लागि छल भइल, मुँह में लुका लगाय ।
तब कहाँ केहु ह आपन, जे संगहि चल जाय ।।

जेकर जइसन नीति बा, तइसन हित भेंटाय ।
साधु जन का साधु मिले, चोर-चोर मिल जाय ।।

धीरज मनवा में धरऽ, करऽ कहीं मत घात ।
समय त पीछे बा पड़ल, का तोहर औकात ।।

कलयुग में अब ना रहल, साँच लोग के शान ।
साँचा बा झूठा भइल, झूठा का अभिमान ।।

अन्त समय जब आ गइल, आँखिन आँसु दहाय ।
धरम-करम जब ना भइल, का परलोके जाय ।।

कलयुग में बा हो गइल, साँचा झूठा जान ।
साँचा बा झूठा भइल, झूठा भइल महान् ।।

कुहुकत-कुहुकत चल गइल, नफरत में संसार ।
नफरत का बाजार में, लहक गइल संसार ।।

प्रेम जगत के सार बा, जान लेहु नर नार ।
प्रेम गइल नफरत भइल, जर जाई संसार ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

चुंगलने के हो गइल, सुनऽ गरम बाजार ।
'शुभ' अबहूँ तू चेत ले, डुबी तोर संसार ।।

काँच उमर में हो गइल, साईं संगे वास ।
सोहबत के ना लुर बा, लाग गइल उदवास ।।

उथान-पतन त ना रहे, जनमत सभे समान ।
जबहिं बुद्धि पोढ़ा गइल, उथान-पतन क भान ।।

तन से हंसा जब उड़ल, कफन गइल भेंटाय ।
ओहू में ना फांड़ बा, का धनवा ले जाय ।।

कहाँ गइल अब देश के, साँच धरम के भान ।
चापलुसी बा आ गइल, झूठ बघारे शान ।।

मरजादा जब ना रहल, बघरब का तू शान ।
माथा तोहर झुक गइल, झूठा बा अभिमान ।।

पढ़ल-लिखल बेढ़ा पड़ल, सब धन खाक समान ।
जब तक भीतर बोध ना, का बनबऽ इन्सान ।।

तारण ला ई तन मिलल, तबे भइल गुरू ज्ञान ।
बात तबो जब ना सुझल, 'शुभ' का करिहन जान ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

'शुभ' पल में कब का होइ, ना केहु का बुझाय ।
जइसे पुरइन पात से, ओस बूंद गिर जाय ।।

कबो घमंडी ना बुझे, गरबे हँसे ठठाय ।
चलल चकर शनिदेव के, पल भर में मुरझाय ।।

मन गिरल बा गाछी से, भीतरमें छपटाय ।
तब तक मोका चुक गइल, का करिहें पछताय ।।

सांसे तक संसार बा, सांस बिना बेकार ।
सांस गइल सब कुछ गइल, ना हमार तोहार ।।

मन का वश में जे रहे, संत ना कबहुँ होय ।
संत पुरूष 'शुभ' ऊ हवें, मन पर काबू होय ।।

बिछुड़त दुख जे दे गइल, परम हीत तू जान ।
मिलत दुखी जे कर दिहल, दुष्टन के पहचान ।।

नारि ऊ जे कम बोले, ओकर ना विश्वास ।
बोली काम बिगाड़ दी, कुल के कर दी नाश ।

इहाँ उहाँ चुगली करी, घर में डाली फूट ।
ना थीर परिवार रही, अब ऊ जाई टूट ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

लाज लजाइल बा जहाँ, गइल धरम ईमान ।
अव काथी बा रह गइल, डूब गइल खांदान ।।

करम क फल मिलबे करी, मत कर तू अभिमान ।
बोअब गाछ बबूर के, आम ना मिली जान ।।

करमे अपना हाथ में, फल त पराया हाथ ।
जइसन करनी रे मना, फलवो तइसन साथ ।।

जे जइसन करनी करी, फल ओइसने पाय ।
फलवा ऊ मिलबे करी, ना बिरथा कहुँ जाय ।।

कलयुगिया नारी सुनऽ, कर दी भीतर घात ।
चुगली कर वश में करी, सास ससुर के मात ।।

कलयुग सबका माथ पर, बइठल बाटे जान ।
एही से झूठ साँच के , ना होता पहचान ।।

सहोदर तऽ उहे भइल, जेकर उदर बा एक ।
ऊ सहोदर कहाँ भइल, उदर जेकर अनेक ।।

एक पेट से जनम भइल, सहोदर ना कहाय ।
पेट अगर जो एक भइल, सहोदर ऊ कहाय ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

साँचा ज्ञान उहे बुझी, हियरा निरमल होय।
ऊ का बूझी बावरा, छले कपट दिन खोय।।

हियरा खोल अमरित भर, मिलल इहे उपहार।
पाछे तोरा का मिली, जइब टांग पसार।।

जब खुद पर विश्वास ना, पर के का विश्वास।
सांसो खाली जात बा, तब केकर बा आश ।।

हवा के महिमा जान ल, प्राणहुँ के आधार।
प्राणे पर तन बा टिकल, प्राण बिना बेकार।।

पानी के गुण सुनत में, मन में होत उछाह।
बिन पानी बनते गइल, जीवन नरक अथाह।।

दादा भा परदादा क, शिकर ढोय दिन-रात ।
अपना से कुछ ना भइल, झूठा बा अगरात ।।

कलयुग के ई रीत सुन, झूठा बा अभिमान ।
आपन कुल डुबाई के, दोसरा क अपमान ।।

एक दिन त खोंता उजड़ी चिरईं भरी उड़ान ।
का सोंचे तू बावरा डूब गइल ईमान ।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

जग में लमहर ऊ भइल, जवन प्राण तोहार।
सब देवन के देव हऽ, घट-घट लेहु निहार।।

सब ज्ञानन से बा इहो, आतम ज्ञान महानू।
हिया में झाँकि परखी ल, ई तोहर भगवान।।

कामे ना अइहें केहु, ह जेकरा में नेह।
निराशा हाथे लागी, छुटिहें जहिया देह।।

जे पर के ठगते गइल, ठगवा उहे कहाय।
जे ठगात ठग से गइल, ऊ ठाकुर बन जाय।।

बाहर-भीतर एक भइल, जग में उहे महान।
बाहर-भीतर अलग बा, असुरन के पहचान।।

भीतर-बाहर एक रंग, बोले अमरित धार।
जेकर दूनु बदरंग ब, बूझीं निपट गंवार।।

हिया नारियल-फल जसऽ, बोली काठ समान।
अइसन जन के जान लऽ, संतन के पहचान।।

कलयुगी जन के बा गति, नख शिख भरल विकार।
हे प्रभु अब उबार लीं, कर दीं बेड़ा पार।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

सोंचल पूरा ना भइल, रावण जब बलवान।
'शुभ' का सोंचे बावरा, समय बड़ा बलवान।।

अबहूँ तू 'शुभ' सोंच लऽ, छोड़ जगत के आश।
झूठा एह संसार में, धोखा बा विश्वास।।

आपन कबहूँ ना भइल, देह जहाँ विश्वास।
तब के आपन जगत में, भइलक खासम खास।।

भरमें में बा पड़ गइल, दुनिया के इन्सान।
देखीं कइसन बन गइल, कलयुगिया इन्सान।।

साँच बखानत ऊ गइल, झूठन के सरदार।
'शुभ' कइसे अब होइहे, तोहर बेड़ा पार।।

प्रेम क रीति उहे बुझी, नफरत जहाँ न होय।
नफरत जहवाँ बा भरल, प्रेम ना कबहुँ होय।।

बाट जोहत दुखा गइल, नयना इहो हमार।
का कहीं सखी आज ले, ना मिलनीं सरकार।।

साजन के घर दूर बा, मन ना पहुँचे पाय।
हियरा के पट खुल गइल, पल में पहुँचे जाय।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

मनवे तोहर चोर बा, झूठा बा मुस्कान।
चादर राम नामा के, का भर पइब उड़ान।।

भेष बना के का भइल, भीतर बोध न होय।
ईमान-धरम चल गइल, खुद के जिनगी खोय।।

नर तन पा के का भइल, ना बा खुद के ज्ञान।
बिना सींग आ पोंछ के, बा नर पशुवत जान।।

एक दिनवा नीड़ उजड़ी, चिरई भरी उड़ान।
तब का करबऽ बावरा, छुट जाई जब प्राण।।

अबहूँ से घर लौट जा, हो गइलक गदबेर।
कवना फेरा में पड़ल, ई जिनगी ना फेर।।

बाहर चकमक दीप बा, घर भीतर अन्हार।
घर में घूसल चोर बा, लूटत धन तोहार।।

बदल गइल सब रीत बा, मूरख बूझे जीत।
आपन छोड़ के बूझे, पर के आपन हीत।।

जिनका हियरा प्रेम बा, जग में ऊ धनवान।
नफरत जहवाँ बा भरल, निरधन के पहचान।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

लोभी लोभे में रही, ठग का सूझी दाव।
गफलत में ऊ डाल के, पूरा कर ली दाव।।

लोभी घर में ना कबो, ठगवा पड़े उपास।
लोभी लोभे में रही, ठग के पूरन आस।।

नशा-नशा में फेर बा, धन्न के बा भा जाम।
दुनो नशा के छोड़ दे, ओकर पूरन काम।।

शुभ-अशुभ के पिछान लीं, लच्छन इहे महान।
जे खुद के पिछान गइल, 'शुभ' ओही के जान।।

जे पर में उलझत गइल, सोंच ना अबहुँ यार।
कुटिलताई तू छोड़ द, लोग देत धिक्कार।।

लोभे छवि धूमिल भइल, मन में करऽ विचार।
अबहूँ लोभ के तेज द, होई जय-जयकार।।

लोभे पाप के मूल ह, पापे कुल डुब जाय।
पापे सब कुछ चल गइल, निशिदिन गोता खाय।।

भव सागर ना दूर बा, मनवे तोर गंवार।
मनवे से तू तउल ले, का सोंचे तू यार।।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

जन धन संग ना जाई जाई खाली इमान ।
फूँक-फूँक आगे चलऽ पल में छूटी प्राण ।।

बित गइल ऊ बात गइल, अबहूँ से ना चेत ।
'शुभ' पड़ल भ्रम जाल में, काहे भइल अचेत ।।

पिछा तोहरा बा पड़ल, माहिल के सरदार ।
माथे कलयुग बा चढ़ल, तबहीं भइल गँवार ।।

ऊँच कुल में जनम भइल, करम नीच गर जान ।
कलयुग के ई रीत हऽ, भीतर में पहचान ।।

मतिया पर पाला पड़ल, बुद्धि गइल हेराय ।
तवहिं खुद से नेह गइल, खुदही भटका खाय ।।

राम लखन दुइ पेट से, मतिया भइल समान।
राम के वन गमन भइल, लछुमन सहचर जान।।

इहे सहोदर हो गइल, मतिया एके समान।
लखन लाल का नेह के, राम हिया में जान।।

ऊर्मिला के उर मिलल, सिया हिया में मान।
तबे लखन के तेजली, सेवकाइ में जान।

www.bhojpurisahityangan.com

-: दोहा :-

पत्नी आ मेहरी में, लमहर अन्तर मान।
मेहरी त सबका मिले, पत्नी बिरला जान।।

पत्नी पति ला कर देत सुन, जानो तक कुर्बान।
मेहरी दैहिक सुख ला, पति के कर दे हान।।

जे मेहरि का वश भइल हरदम रही परास।
उलझन में फँसा दीही कुल के सत्यानाश।।

जन-धन देख मत भूलिह, ईश अमानत मान।
पल में प्रलय होइहें, सबके होई हान।।

पूत मोह में मत कबो, 'शुभ' गँवइह ईमान।
नाहिं त जइसे हो गइल, कौरव वंश क हान।।

जन-धन साथे ना जाइ, जाइ खाली इमान।
फूँक-फूँक आगे चलऽ, पल में छुटिहें प्राण।।

बीत गइल उ बात गइल, अबहूँ से ना चेत।
'शुभ' पड़ल भ्रमजाल में, नाहक भइल अचेत।।

पद पा के बा हो गइल, ना किनका अभिमान।
जिनका मद ना हो सकल उहे हऽ बुद्धिमान।।

www.bhojpurisahityangan.com

विमर्श

भोजपुरी शुभ दोहावली हमरा नजर में

सत्यनारायण महतो



कविवर भाई शुभ नारायण सिंह 'शुभ' द्वारा विरचित 'भोजपुरी शुभ दोहावली' के पांडुलिपि हमरा हाथ में बा, जवना के पढ़ के हम मंत्रमुग्ध हो गइल बानीं। एह दोहन के पढ़ला से हठात रहीम, कबीर भा बिहारी के इयाद आ रहल बा। अतने ना पूर्व में लिखल इनकर चार गो काव्य-संग्रह 'राग-अनुराग', 'शुभ-दर्पण', भोजपुरी रचना संसार चाहे 'बेटी हई वरदान' पढ़ला से ई स्पष्ट हो जाता कि भाई 'शुभ' जी एह समाज का रवैयन पर बड़ा बारीकी से नजर डलले बानीं, जवन भोजपुरी के शेक्सपियर भिखारी ठाकुर का समकक्ष खड़ा कर देता। जवना ढग से भोजपुरी नवजागरण के अग्रदूत भिखारी ठाकुर अपना रंगमंच का माध्यम से सामाजिक रवैयन के स्पष्ट रूप से प्रस्तुत कर दिहलन ठीक ओही लेखा भाई 'शुभ' जी आज का ढहत ढिमलात सभ्यता संस्कृति के परोसे में कवनो कोर-कसर अपना रचनन में नइखन छोड़ले। बारीकी त ई बा कि कवि सुधारात्मको दूष्टिकोण के परोस देले बाड़न, जवना से समाज के फेर से नव निर्माण के मार्ग प्रशस्त हो सकत बा। पाँचो काव्य-संग्रह अनुभूतिपरक आ कालजयी बा, जवन तुलसी, कवीर, रहीम भा बिहारी का काव्य लेखा अनन्तकालीन हो जाई। भाई 'शुभ' जी अपना माई, बाबू आ दादा-दादी के एह काव्यन के समर्पित कर के ओह सब लोग के अमर कर दिहलन। अइसने लोग खातिर कहल गइल बा-

धन्य मातुपिता धन्य हैं, धन्य सुहृद अनुरक्त
धन्य ग्राम सोई जानिए जहँ जनमे गुरू भक्त।

सचमुच में विश्वशांति दूत श्री प्रेम रावत जी के शिष्य भाई 'शुभ' जी कुल खान्दान का साथ-साथ गाँव-जवार के भी नाम रौशन कर देलन।

www.bhojpurisahityangan.com

जहाँ तक गद्य-साहित्य के बात बा भाई 'शुभ' जी भारतीय भाषा विज्ञान आ भोजपुरी आ भोजपुरी कथा-साहित्य के उद्‌भव आ विकास के रचना करके भोजपुरी का महान् कमी के पूरा कर देलन। एह से 'शुभ' जी चिन्तन-मनन भा अध्ययनशीलता के स्पष्ट बोध होता। अइसने व्यक्ति खातिर कहल गइल बा-

काव्यशास्त्र विनोदेन कालो गच्छति धीमताम।
व्यसनेन च मूर्खाणां निद्रया कलहेन वा।

अइसे त भाई 'शुभ' जी के हम 1980 से जानत बानीं। ई अंचल तरैया (सारण) का विभिन्न विद्यालयन में काफी कर्मठता, ईमानदारी आ सच्चरित्रता का साथ शिक्षण कार्य कइले बाड़न। तरैया अंचल में प्राथमिक शिक्षक संघ के अध्यक्षो रहल बाड़न। इनका कुशल व्यवहार से प्रभावित हो के हम इनका संगे जूड़ गइनी। पहिले त हम एगो कुशल शिक्षके जानत रहीं, बाकि अवकाश प्राप्ति का बाद साहित्य-रचना में लाग गइनीं। इनकर रचना स्पष्ट संदेश दे रहल बा कि तुलसी का जइसे रत्नावली से प्रेरणा मिलल ठीक ओही लेखा भाई 'शुभ' जी का काव्यन से स्पष्ट होता कि इहों का जरूर पारिवारिक भा सामाजिक कवनो ठेस लागल बा जवन आप बीती से जग बीती बन गइल बा।

अंत में भाई 'शुभ' जी के एह काम ला बधाई देत इनका दीर्घायु होखे खातिर भगवान से प्रार्थना करत आग्रह करेब कि अइसहीं कलम चलत रहो आ समाज के कुछ देत भोजपुरी के भंडार भरात रहो।

जय भोजपुरी
अवकाश प्राप्त शिक्षक (एम0ए0 प्रशिक्षित) आ पूर्व अंचल
अध्यक्ष प्रा0शि0सं0 तरैया (सारण) सह वर्तमान अंकेक्षक प्रा0शि0 संघ
सारण, ग्रा+पो0- ओल्हनपुर, थाना- मढ़ौरा (सारण) बिहार

www.bhojpurisahityangan.com

विमर्श

भोजपुरी शुभ-दोहावली हमरा नजर में

कविवर शुभ नारायण सिंह 'शुभ' जी के भोजपुरी शुभ दोहावली पढ़ के हमरा बहुत खुशी बा कि इहाँ के रात-दिन भोजपुरी माई के साज-श्रृंगार करे में आपन पेट काट-काट के जुटल बानीं आ लिख-लिख के प्रकाशन करा रहल बानीं।

दोहा के विधा धारदार विद्या ह, जवना के निभावे में इहाँ का भरपूर सुफल बानीं। निश्चित रूप से ई दोहावली भोजपुरी का भंडार के शोभा बा। कलमकार का कलमकारी के सलाम करत दिल से दोआ अशीष दे रहल बानीं, काहे कि एकरा पहिलहूँ चार गो सफल काव्य-संग्रह (1) राग-अनुराग, (2) शुभ-दर्पण, (3) बेटी हई वरदान आ, (4) भोजपुरी रचना संसार जइसन सफल अनुभूतिपरक कालजयी काव्य धरोहर भोजपुरी का भंडार में समर्पित कर चुकल बानीं आ संगे-संगे भारतीय भाषा विज्ञान आ भोजपुरी आ भोजपुरी कथा-साहित्य के उद्भव आ विकास प्रकाशित करा के भोजपुरी में कमी के पूरा कर देनीं, जवन भोजपुरी खातिर अनमोल पुस्तक हो गइल बा। डॉ0 अर्जुन तिवारी के कहनामो बा कि अबतक अइसन सोगहग किताब ना भेटाइल रहल, एह से हमरो ई कहे में कवनो हिचक नइखे कि ई उत्कृष्ट शोधपूर्ण भोजपुरी भाषा विज्ञान भोजपुरी भाषा के सोगहग-संपूर्ण पहिला भाषा विज्ञान का रूप में निश्चित रूप से मूल्यांकित होई।

डॉ0 पवन कुमार
ग्राम- डुमरी छपिया (सारण) बिहार
मो0-9661254606

www.bhojpurisahityangan.com

विमर्श

भोजपुरी शुभ दोहावली हमरा नजर में

ललन पाण्डेय



(ललन पाण्डेय)

भाई शुभ नारायण सिंह 'शुभ' द्वारा विरचित भोजपुरी शुभ-दोहावली के पांडुलिपि हमरा हाथ में बा, जवना के पढ़ के हम मंत्रमुग्ध हो गइल बानीं। हमरा नइखे बुझात कि कविवर भाई 'शुभ' जी केतना मेहनत कर के आपन रचना करीले, जवना से भोजपुरी के भंडार भरल जा सके। भोजपुरी के पहिला दोहावली 'जौहर दोहावली' भेंटाइल आ दूसरका भोजपुरी 'शुभ दोहावली'।

भोजपुरी शुभ दोहावली में नीति से लेके श्रृंगार, भक्ति भा अउरी अलग-अलग रस के पुट देखे के मिल रहल बा। साथ-साथ कलयुगिया उपभोक्तावादी, बाजारवादी लोगनों पर करारा चोट बा। भाई शुभ जी छली प्रपंची भा चुंगलन का ऊपर कटाक्ष करे से नइखन चुकल। जइसे-

गुण कुलछनी नारी के, चुगली करत अघाय ।
घर-घर में नारी उहे, अगिया देत लगाय।।

अतने ना नारी के जगतजननी दर्शावत इहो कहले बाड़न कि कुछ लोग एह कलयुग में अइसनो हो गइल बा जे पुतहीन बेटी वाला के निर्वन्श कहत बा त ओकरो के नइखन बकसले। जइसे-

बेटी वाला के केहु, कहे सदा निर्वन्श।
लोग सबऽ उनके कही, हरनाकुश आ कंस।।

सहोदर भाई का बारे में आपन विचार रखले बाड़न। जइसे सहोदर भाई का ऊपर लिखले बाड़न-

सहोदर तऽ उहे भइल, जेकर उदर बा एक ।
ऊ सहोदर कहाँ भइल, उदर जेकर अनेक ।।

सहोदर का ऊपर रावण-विभिषण, राम-लक्ष्मण भा राम-भरत के उदाहरण देत, लिखले बाडन-

www.bhojpurisahityangan.com

एक पेट से जनम भइल, रावण विभिषण नाम ।
एगो भगत बा बन गइल, दोसर असुर महान् ।।
राम भरत दुइ पेट से, पेट बा एक समान ।
राम के बनवास भइल, भरतो नंदीग्राम ।।
राम के वन गमन भइल, सहचर लछुमन जान।
भाई सहोदर ई भइल देह दू एके प्राण।।
राम के गद्दी छूटल, भरतो छोड़स जान ।
इहे सहोदर बन गइल, उदर दुनो एक जान ।।

एह ढंग से भाई 'शुभ' जी जवन एह किताब में दर्शवले बाड़न यदि समाज ओकरा के अपना लेवे त धरती पर स्वर्ग के कामना कइल जा सकत बा।

एकरा पहिलहूँ भाई शुभ जी राग-अनुराग शुभ-दर्पण, बेटी हई वरदान आ भोजपुरी रचना संसार चार गो काव्य संग्रह आ एगो भारतीय भाषा विज्ञान आ भोजपुरी एह विषय के पहिलका संपूर्ण भाषा विज्ञान लिख के भोजपुरी के मान सम्मान बढ़ावे के काम कइले बाड़न। संगे-संगे भोजपुरी कथा-साहित्य के उद्भव आ विकास लिख के भंडार भरे के काम कइले बाड़न।

हम कवि के अनघा बधाई देत इनका दीर्घायु होखे खातिर ईश्वर से प्रार्थना करत बानीं। पुस्तकन के पाठ्यक्रम में सम्मिलित करे खातिर पाठ्यक्रम निर्माता लोग से आग्रहो करत बानीं ताकि स्वस्थ समाज के निर्माण हो सके।

अवकाश प्राप्त प्रधानाध्यापक
ग्राम- दुरगौली, पो0- बन्सोही,
जिला- सारण, बिहार

www.bhojpurisahityangan.com

शुभ चिन्तन के शुभ दोहावली

शुभ दोहावली के पाण्डुलिपि पढ़त हम मंत्रमुग्ध हो गइल बानीं। हमरा मशरक भोजपुरी मंडल से भोजपुरी भाषा आ साहित्य के भण्डार में बहुत अजगूत आ बरियार साहित्यिक चेतना के चितेरा साहित्यकार लोग उभर के सामने आइल बा, जवना में एगो विशेष पहचान के साहित्यकार साधक आदरणीय शुभ नारायण सिंह 'शुभ' जी बानीं, जेकर लगभग दर्जन भर उत्कृष्ट रचनन के प्रकाशन-प्रसारण हो चुकल बा।

शुभ दोहावली ई भोजपुरी के दुसरका दोहावली हऽ। भोजपुरी के पहिला दोहावली जौहर दोहावली एगो भोजपुरी भाषा-साहित्य का कमी के पूरा कइलस त 'शुभ' दोहावली ओकर संपुष्टि बा। वैचारिक, नैतिक, सामाजिक आ अनुभूतिपरक संदर्भण प रचाइल ई दोहावली निश्चित रूप से भोजपुरी भाषा के मान-सम्मान आ नैतिक ऊर्जा अनूभूतिपरक तथ्य कथ्य का साथ व्याकरणीय चौकसी के परिचायक बनल भोजपुरी के भण्डार भर रहल बा। एह महान् कार्य खातिर यशस्वी कवि 'शुभ' नारायण सिंह 'शुभ' जी के कोटिशः प्रणाम आ बधाई।

रविकान्त सिंह 'रवि'
व्याख्याता भोजपुरी
जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा।

www.bhojpurisahityangan.com

''शुभ दोहावली'' हमरा दृष्टि में,

नागेन्द्र गिरि उर्फ कवि जी।



"शुभ दोहावली "के शब्द संयोजन आ तुलनात्मक, भावार्थ से ,संत,कबीर, गोस्वामी तुलसी दास,अउर रहिम के वाणी के तरह ,समाज सुधारक ,ज्ञान संग्रह के रूप में सरल भाषा में रचित दोहा से विशेष आभा,टपक रहल बा , जवना के पढ़ला से दुविधा के भ्रमजाल में फंसल मन,अउर सांसारिक मोह माया में भटकल मनोवृत्ति के निस्तार में सफल प्रयास खातिर, शांतचित्त भावुक कवि शुभ नारायण सिंह शुभ जी के कोटि कोटि बधाई दे रहल बानी।।

एक्करा पहिले भी शब्द साधक भाषा विज्ञानी कवि द्वारा प्रकाशित पुस्तक, राग अनुराग, शुभ दर्पण, भोजपुरी रचना संसार, बेटी हई वरदान, भारतीय भाषा विज्ञान आ भोजपुरी, आदि रचना से विद्वद् समाज का विशेष लाभ पहुंच रहल बा,हमरा पुरा विश्वास बा कि, "शुभ दोहावली" भी वर्तमान आ भावी पीढ़ी के मानवता के पथ पर ले चले में बहुत ही सहायक सिद्ध होई।।

एही शुभकामना के साथ,

जय शुभ दोहावली" **जय शुभ नारायण कवि** "

अवकाश प्राप्त प्रधानाध्यापक (मध्य वि0 श्रीनगर,नगरा)

एम0ए0 प्रशिक्षित (संस्कृत)

ग्राम ककढ़िया मठिया, खैरा, सारण।

मो नं0-9973918126

www.bhojpurisahityangan.com

''शुभ चिन्तन-चेतना के परिचायक 'शुभ दोहावली'

-सुजीत कुमार 'सौरभ'

दोहा मात्रिक छंद कला, भाषा भाव गंभीर।
तेरह ग्यारह के दुगुन, हन-हन मारीं तीर।।

दोहा-लेखन के परंपरा भोजपुरी भाषा साहित्य में बहुत पुरान बा। लोक प्रचलन से बिरहा गायन तक आ अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन द्वारा प्रकाशित भोजपुरी सतसई से जौहर दोहावली तक भोजपुरी दोहा-लेखन का रूप में पुष्ट रूप से उभर के सामने आइल बा। एही बीचे यशस्वी कवि श्री शुभ नारायण सिंह 'शुभ' जी के 'शुभ दोहावली' भोजपुरी में बरियार दोहा-लेखन के समसामयिक अनुभूतिपरक आ सम्यक संदर्भ के परिचायक बा।

शुभ दोहावली व्याकरणीय चौकसी के साथ कलयुगी स्वार्थी चिंतन के अनुभूतिपरक दर्पण बन गइल बा, जवना में समय-समाज के चेहरा साफ-साफ देखल सकत बा।

1. भाई-माई से लड़े बीच पड़ल सरदार।
भाई गर जो ना बुझल, बूझी निपट गंवार।।
2. कथनी में कुछ अउर बा, करनी में कुछ अउर।
चाल मायाबी ह इहे, गले माल संग लउर।।
3. जहवाँ भीतर जहर बा, बाहर अमरित धार।
कालनेमी ऊ बा बनल, कपटी बा व्यवहार।।

उपर्युक्त व्याकरणीय चौकसी से सजल-धजल आज के साँच अपना अनुभव के आँच का साथ पूरा-पूरी कलात्मक कौशल के परिचायक बा।

अंत में हम बहुआयामी व्यकित्व के धनी भोजपुरी के विभिन्न विधन पर दर्जन भर से ऊपर मानक पुस्तकन के रचयिता श्री शुभ नारायण सिंह 'शुभ' जी के एह कृति खातिर कोटिशः बधाई आ नमन करत जय भोजपुरी कहत अपना वणी के विराम देत बानीं।

शोध छात्र
दुर्ग विश्वविद्यालय दुर्ग
रायपुर (छत्तीसगढ़

www.bhojpurisahityangan.com

''शुभ चिंतन के परिचायक शुभ दोहावली'

-रामेश्वर ओझा



कविवर शुभ नारायण सिंह 'शुभ' द्वारा विरचित भोजपुरी शुभ दोहावली के देखते-पढ़ते हितोपदेश के ई पाँती अनायासे इयाद आ गइल।

काव्य शास्त्र विनोदेन, कालो गच्छति धीमताम।
व्यसनेनच मूर्खाणाम, निद्रया कलहेन वा।।

सचमुच में ई पाँती जवना परिपेक्ष्य में लिखल गइल बा ओकर साक्षात् दर्शन कविवर शुभ नारायण सिंह 'शुभ' में देखे के मिल रहा बा। चिंतन-मनन का संगे-संगे अध्ययनशीलता के जवन दर्शन 'शुभ' जी में हो रहल बा, ऊ अद्भुत बा। जब कबो शुभ जी से भेंट होला त कुछ ना कुछ लेखने के बात होखे लागेला। ऊ चाहे पद्यात्मक होखे भा गद्यात्मक। इहे कारण बा कि 2017 से ले के अब तक पाँच गो काव्य संग्रह आ दू गो गद्यात्मक पुस्तकन के रचना हो गइल बा। कुछ रचना अप्रकाशितो बाड़ी सन जवन समयानुसार जरूर प्रकाशित होई।

'शुभ' जी का चिंतन-मनन के परिणाम इनका काव्य संग्रह 'राग-अनुराग', 'शुभ-दर्पण', 'बेटी हई वरदान', 'भोजपुरी रचना संसार आ भोजपुरी शुभ दोहावली' में मिलत बा आ अध्ययनशीलता के परिणाम भारतीय भाषा विज्ञान आ भोजपुरी कथा साहित्य के उद्भव आ विकास का रूप में उपलब्ध बा।

'शुभ' जी काव्य का संग्रहन में आत्मिक भा सामाजिक उत्पीड़न के सच्चाई झलक रहल बा। काव्यन के पढ़ला से भोगल साँच के अनुभव हो रहल

www.bhojpurisahityangan.com

बा। अइसन लागत बा कि भाई 'शुभ' जी अपना जीवन-काल में खाली हलाहले के पान करत गइल होखस जवन अब शब्दन के हीरा-मोती में सजा के सामाजिक दुर्दशा से निजात पावे खतिर समाज का सोझा परोस रहल बानीं आ अपना भीतर के दुख के भरास निकाल रहल बानीं जवन उहाँ का एगो दोहा में देखल जा सकेला-

बाट जोहत दुखा गइल, नयना इहो हमार।
का कहीं सखी आज ले, ना मिलनीं सरकार।।

एह दोहावली के पढ़ला से ई स्पष्ट बुझाता कि 'शुभ' जी आप बीती के जग बीती बनावे में भरपूर प्रयास कइले बाड़न आ एह में ई सफलो बाड़न। जइसे एक दू गो दोहा देखल जा सकत बा-

भाई-भाई से लड़े, बीच पड़ल सरदार।
भाई गर जो ना बुझल बूझीं निपट गंवार।।
बाप बुलावा भेजलन, बड़का दउड़ल जाय।
अनुज का नीक न लागे, नालायक कह जाय।।

एही कुछ चन्द शब्दन का साथ भाई 'शुभ' जी का लंबा आयु खातिर भगवान से प्रार्थना करत बानीं आ कवि से पूरजोर आग्रह करत बानीं कि कलम चलत रहो आ समाज के कुछ दिआत रहो। आवे वाला समय में एह किताबन के निश्चित रूप से मूल्यांकन होई हमरा पक्का विश्वास बा।

अवकाश प्राप्त प्रधानाध्यापक
एम0ए0सी0,बी0एड0
म0वि0 चाँदपुरा, अं0 इसुआपुर (सारण)
वर्तमान पता- मशरक नेहरू टोला, मशरक

www.bhojpurisahityangan.com

लेखक-परिचय

नाम	:	**शुभ नारायण सिंह**
उपनाम	:	शुभ नारायण सिंह 'शुभ'
जन्म तिथि	:	02 जनवरी 1955 ई0
शिक्षा	:	एम0 ए0 (हिंदी) बिहार विश्व विद्यालय मुजफ्फरपुर, बी0टी0 प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महावि0 थावे, सारण (बिहार)
पेशा	:	अवकाश प्राप्त शिक्षक आ पूर्व अंचल अध्यक्ष प्राथमिक शिक्षक संघ तरैयाँ सारण)
माता	:	स्व0 कौशल्या देवी
पिता	:	स्व0 शिवशंकर सिंह अवकाश प्राप्त शिक्षक
इकलौती बेटी	:	श्रीमती सुमन कुमारी, पति- श्री नागेन्द्र कुमार सिंह (चार्टेड एकाउन्टेन्ट)
स्थायी पता	:	ग्राम चरिहारा, पो0- मशरक, जिला- सारण (बिहार) पिनकोड- 841417, मो0- 9939789181
अध्यक्ष	:	अखिल भारतीय भोजुपरी साहित्य महासभा बिहार इकाई
सम्मान	:	(1) बाबू रघुबीर नारायण सम्मान 2016 ई0 हेलो भोजपुरी (राष्ट्रीय मासिक पत्रिका)· नई दिल्ली द्वारा प्राप्त, (2) भिखारी ठाकुर सम्मान 22 मार्च 2017 ई0 खानकाहे आलिया इमामिया शफियाबाद शरीफ, थाना- बैकुण्ठपुर, जिला- गोपालगंज (बिहार), (3.) बज्म ए सुहैल सम्मान छपरा 2017 ई0, 4. साहितय

www.bhojpurisahityangan.com

रश्मि सम्मान 2017 ई0 साहित्यिक संस्था
छपरा द्वारा प्राप्त

(5) वज़्म-ए-हबीब सम्मान 2018 ई0बरौली गोपालगंज (बिहार), (6) पं0 धरीक्षण मिश्र साहित्य सम्मान 2018 ई0 सर्व भाषा ट्रस्ट नई दिल्ली द्वारा प्राप्त, (7) पं कुबेरनाथ मिश्र 'विचित्र' स्मृति सम्मान 2020 ई0 विश्व भोजपुरी परिषद् नई दिल्ली । (8) हबीब भोजपुरी विकास मंच छपरा साहित्य सेवी सम्मान 2021। (9) अक्षवर दिक्षित स्मृति सम्मान भोजपुरी विकास मंडल सिवान द्वारा प्राप्त।

भोजपुरी में प्रकाशित-अप्रकाशित कृतियन के सूचीः

1. 'राग-अनुराग (गीत-गजल संग्रह) मार्च 2017 ई0
2. 'शुभ दर्पण (काव्य-संग्रह) मार्च 2018 ई0
3. बेटी हई वरदान (कविता संग्रह) मार्च 2019 ई0
4. भोजपुरी रचना संसार (कविता संग्रह) 2019 ई0
5. भारतीय भाषा विज्ञान आ भोजपुरी प्रकाशन वर्ष 2021 ई0
6. भोजपुरी कथा साहित्य के उद्भव आ विकास
7. शुभ दोहावली
8. कलयुग के देवता (नाटक) अप्रकाशित
9. भोजपुरी साहित्य के आधुनिक इतिहास (अप्रकाशित)
10. जीवन वृतान्त भाग-01 (अप्रकाशित)

www.bhojpurisahityangan.com

विमर्श

भोजपुरी दोहावली हमरा नजर में।

आचार्य प्रेमचन्द्र

दोहा मात्रिक छन्द कला भाषा भाव गंभीर।
तेरह ग्यारह के दुगुण मारीं हन-हन तीर।।

जौहर भोजपुरी दोहावली

यशस्वी कवि शुभ नारायण सिंह 'शुभ' द्वारा विरचित दोहन के संग्रह पढ़ के आज हमार मन बड़ा हर्षित बा कि ई भोजपुरी भाषा आ साहित्य के महाभण्डार में भंडार करे योग्य बा आ आज के अश्लीलता, फूहड़पन आ बाजारवादी उपभोक्तावादी स्वार्थी सोंच पर एगो लमहर प्रहार, पुरहर कटाक्ष आ संयम के कील ठोकल बा।

भोजपुरी में दोहा-लेखन के परम्परा पहिले से बा, बाकि छिट-फुट किताबन में प्रकाशित रली ह सन। एकजूट दोहा-संग्रह ना रहे तब अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य-सम्मेंलन एगो साझा दोहा-संग्रह भोजपुरी सतसई का नाम से प्रकाशित कइलक। ओकरा बाद भोजपुरी में दोहावली ना रहे। तब डॉ0 जौहर शफियाबादी जी भोजपुरी के पहिला दोहावली जौहर भोजपुरी दोहावली के नाम से 2016 में प्रकाशित कर के परोसलन, जवना से भोजपुरी भाषा-साहित्य के मान-सम्मान बढ़ रहल बा।

यशस्वी कवि शुभ नारायण सिंह 'शुभ' जी के एह भोजपुरी शुभ दोहावली के समय साध-साधना आ सम्यक् संकल्प के विम्ब साफ-साफ उभर के पाठक का सोझा आ रहल बा, जवन व्याकरणीय चौकसी आ मानवीय संवेदना के एगो ग्रन्थ बन गइल बा, जवना खातिर कवि के कोटिशः बधाई देत बानीं आ रउओ सभन दीं। प्रत्यक्षम् किं प्रमाणम्। दोहावली पढीं।

आचार्य प्रेमचन्द
एम0ए0एल0 टी0एम0एड0
राजकीय शिक्षा पुरस्कार प्राप्त पूर्व प्रधानाध्यापक एवं व्याख्याता
एस0एन0जी0 उच्च विद्यालय रामपुर-अटौली, सारण
मो0-9546453224

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

लेखक परिचय



नाम	:	शुभ नारायण सिंह
उपनाम 'शुभ'	:	आचार्य शुभ नारायण सिंह
जन्म तिथि	:	02 जनवरी 1955 ई0
शिक्षा	:	एम0 ए0 (हिन्दी), बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, बी0 टी0 प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय थावे, सारण, बिहार।
पेशा	:	अवकाश प्राप्त शिक्षक एवम् पूर्व अंचल अध्यक्ष प्राथमिक शिक्षक संघ अंचल तरैया, सारण।
माता	:	स्व0 कौशल्या देवी
पिता	:	स्व0 शिवशंकर सिंह (शिक्षक)
इकलौती बेटी	:	श्रीमती सुमन कुमारी, (एम0ए0 भोजपुरी) पति- श्री नागेन्द्र कुमार सिंह (चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट)
स्थाई पता	:	ग्राम- चरिहारा, पो0- मशरक, थाना- मशरक, जिला- सारण, बिहार, पिनकोड-841417, मो0- 9939789181
सम्मान	:	(1) बाबू रघुवीर नारायण सम्मान 2016 ई0 हेलो भोजपुरी (राष्ट्रीय मासिक पत्रिका) नई दिल्ली द्वारा प्राप्त। (2) भिखारी ठाकुर सम्मान 22 मार्च 2017 ई0 द्वारा खानकाहे आलिया इमामिया शफियाबाद शरीफ, थाना- बैकुण्ठपुर, जिला- गोपालगंज (बिहार)

₹ 150

शिवालिक प्रकाशन

4648/21, GF , Ansari Road , Daryaganj
New Delhi -110002
Ph./Fax : 011-42351161
E-mail: shivalikprakashan@gmail.com
Website: www.shivalikprakashan.in
facebook/shivalikprakashan/

ISBN 978-93-91214-00-5